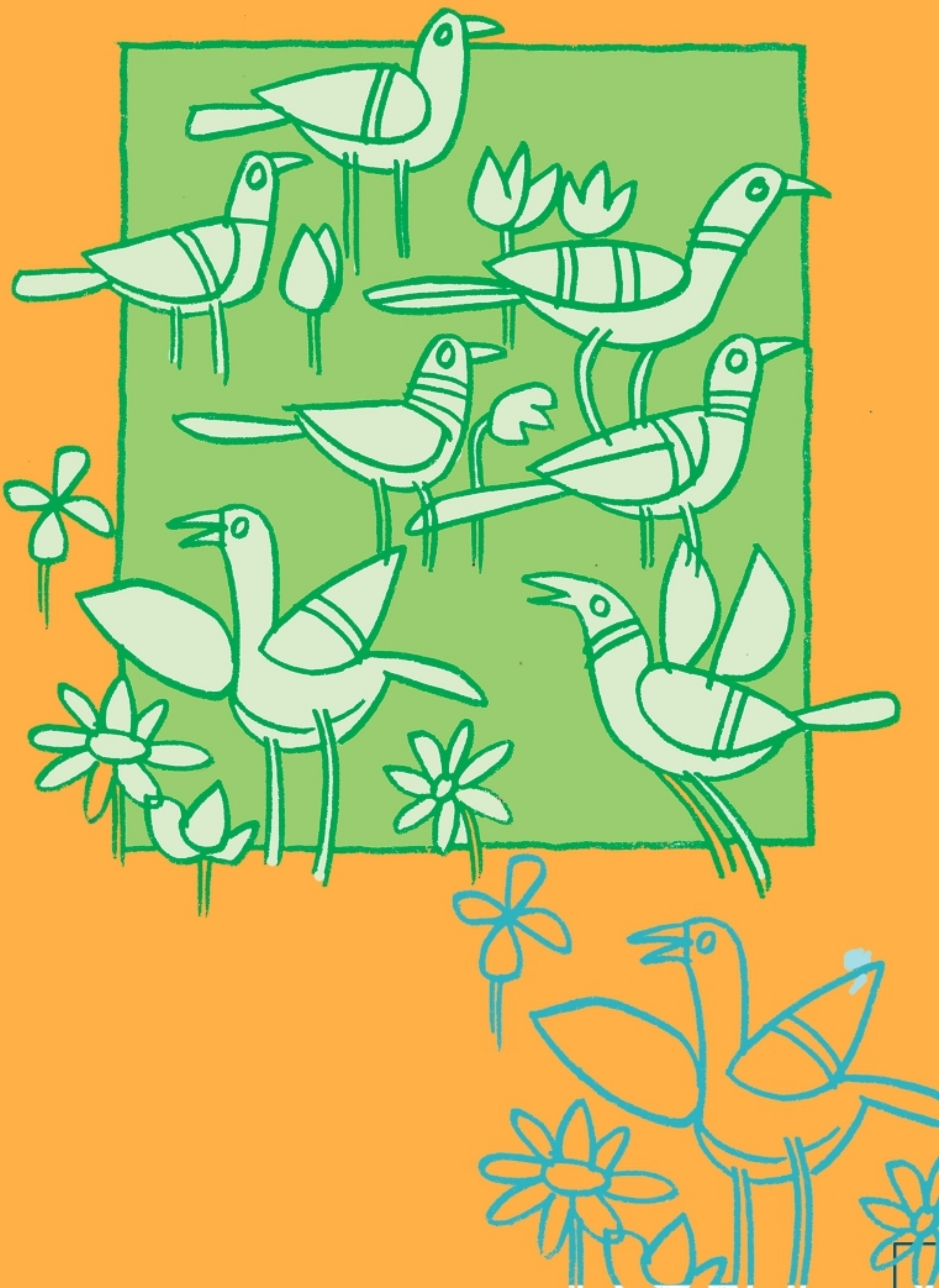
रुचिरा

प्रथमो भागः

षष्ठवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्



21

रुचिरा

प्रथमो भागः

षष्ठवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्



0649

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-468-0

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928
संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण
अगस्त 2010 भाद्रपद 1932
पुनर्मुद्रण
फ़रवरी 2012 फाल्गुन 1933
दिसंबर 2012 अग्रहायण 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
फ़रवरी 2015 फाल्गुन 1936
दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937
जनवरी 2017 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940
सितंबर 2019 भाद्रपद 1941

PD 530T RPS

₹ 55.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बुकमैन इंडिया, सी-4, डी.आई.सी. कैम्पस, इंडस्ट्रियल इस्टेट, मुज़फ्फरनगर-251 001 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*बिबाष कुमार दास*
सहायक संपादक	:	*एम. लाल*
उत्पादन सहायक	:	*ओम प्रकाश*

आवरण
कलोल मजूमदार

चित्रांकन
कलोल मजूमदार एवं अरूप गुप्ता

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वतते, न तु नीरसतायाः साधनम्। अस्मिन् संस्करणे पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां

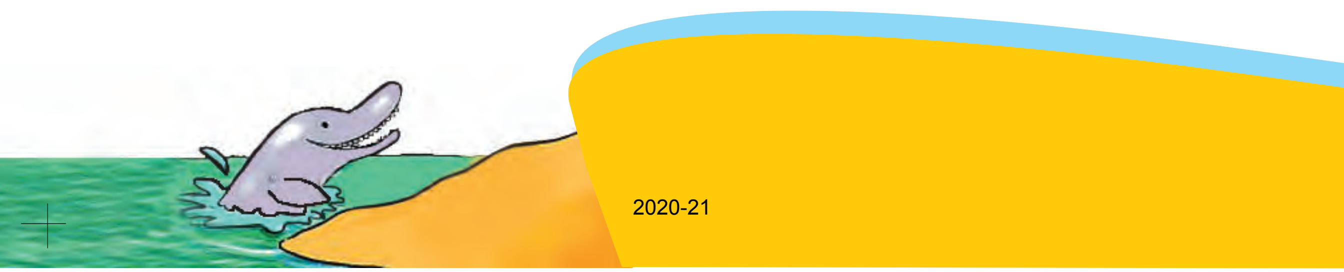


प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नवदेहली
20 नवम्बर 2006

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्



पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

अर्कनाथ चौधरी, *प्रोफ़ेसर*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर कैंपस, जयपुर।

राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रवाचक* (संस्कृत), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा।

वासुदेव शास्त्री, *संस्कृत प्रभारी* (सेवानिवृत्त), एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर।

रामास्वामी आयंगर, *निदेशक* (अवकाश प्राप्त), चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन, बेंगलूरु।

दु:शासन ओझा, *प्राचार्य*, केंद्रीय विद्यालय, पुरी, ओड़ीशा।

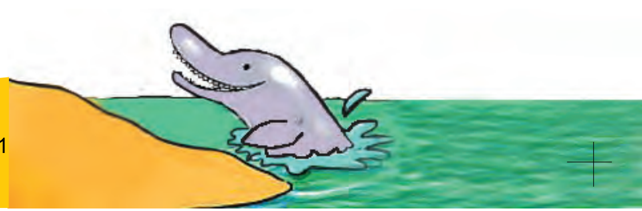
सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड।

पुरुषोत्तम मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), रा.बा.मा.वि., कादीपुर, दिल्ली।

संजू मिश्र, *टी.जी.टी.* (संस्कृत), ए.पी.जे. स्कूल, सैक्टर 16-ए, नोएडा।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।



पाठ्यपुस्तक पुनरीक्षण समिति

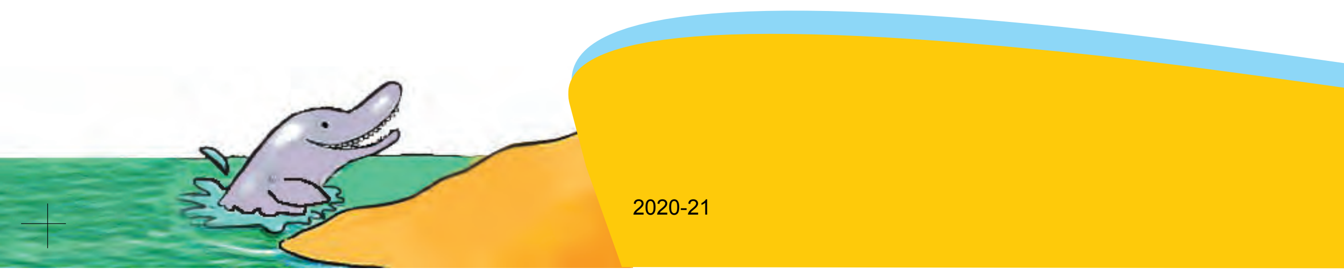
राधावल्लभ त्रिपाठी, *कुलपति*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), जनकपुरी, नयी दिल्ली।
रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली।
उमाशंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।
सुरेश चन्द्र शर्मा, *निदेशक*, दिल्ली संस्कृत अकादमी, झंडेवालान, नयी दिल्ली।
पंकज कुमार मिश्र, *वरिष्ठ प्रवक्ता* (संस्कृत), सेंट स्टीफ़ेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता*, एम.वी. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, गीता कालोनी, दिल्ली।
पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।
सुगन्ध पाण्डेय, टी.जी.टी. (संस्कृत), केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।
रणजित बेहेरा *(समन्वयक)*, *प्रवक्ता* (संस्कृत), भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों विशेषतः प्रोफ़ेसर राजेन्द्र मिश्र, *पूर्व कुलपति*, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी; इच्छाराम द्विवेदी, *प्रवाचक*, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली एवं नारायण दाश, *शिक्षक* (संस्कृत), सर्वकारीय उच्च विद्यालय, गुम्मा, गजपति, ओड़ीशा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, *कुलपति*, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली; प्रो. रमेश भारद्वाज, *संस्कृत विभाग*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रो. रंजना अरोड़ा, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; प्रो. जतीन्द्र मोहन मिश्र, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; प्रो. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., डॉ. आभा झा, *पी.जी.टी.*, (संस्कृत), गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली तथा श्रीमती लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, *टी.जी.टी.*, (संस्कृत), केंद्रीय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली ने पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है। परिषद् सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

परिषद् डॉ. हर्षदेव माधव तथा डॉ. विश्वास के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक की निर्माण-योजना से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के समन्वयक व उनके विभागीय सहयोगी कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* एवं कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर* (संस्कृत), तथा जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर, (संस्कृत)* साधुवाद के पात्र हैं। पुस्तक निर्माण में विविध सहयोग के लिए परसराम कौशिक, *प्रभारी*, कंप्यूटर स्टेशन, भाषा शिक्षा विभाग तथा *डी.टी.पी. ऑपरेटर* नरेन्द्र कुमार वर्मा, राजीव, कमलेश आर्या तथा कु. अनीता धन्यवाद के पात्र हैं।



भूमिका

भारत एक बहुरंगी राष्ट्र है। ऐसे में कोई भी पाठ्यपुस्तक एकरंगी और सपाट नहीं हो सकती। शिक्षाशास्त्र का विमर्श भी यह मानता है कि अध्ययन-अध्यापन के क्रम में विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि एवं परिवेश को अगर ठीक तरीके से शामिल नहीं किया जाता तो वह ज्ञानात्मक स्तर पर बोझिल हो जाता है। 1993 में यशपाल समिति ने अपनी रिपोर्ट (*शिक्षा बिना बोझ के*) में इसकी ओर ध्यान दिलाया है। इसके अनुसार सीखने-सिखाने के क्रम में विद्यार्थियों के सन्दर्भ को शामिल किया जाना विशेष महत्त्व रखता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) भी सुझाती है कि बच्चे-बच्चियों के स्कूली जीवन को बाहर की दुनिया से जीवंत रूप से जोड़ा जाना चाहिए।

संस्कृत की **रुचिरा** शृंखला की तीनों पुस्तकें उपरोक्त वैचारिक आधार पर विकसित की गई हैं। इस शृंखला की पहली पुस्तक **रुचिरा प्रथमो भागः** (पुनरीक्षित संस्करण 2018) आपके सामने प्रस्तुत है। अपने नाम के अनुरूप इसे रुचिकर बनाने का यथासंभव प्रयास किया गया है। पुस्तक-निर्माण का मुख्य उद्देश्य यह रहा है कि संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की विद्यार्थियों की क्षमता के विकास में यह सहायक हो। यहाँ संस्कृत भाषा-शिक्षण पर बल है।

संस्कृत भाषा जितनी ही पुरातन है, उतनी ही वह अपने को चिर नवीन भी बनाती आई है। बहुत से अज्ञात कवि हुए हैं जिन्होंने सामान्य जन की छोटी-छोटी इच्छाओं, सपनों एवं कठिनाइयों को भी स्वर दिया है। संस्कृत के आधुनिक लेखन में यह लोकधारा और मुखर हुई है। यही नहीं संस्कृत वर्तमान जीवन और हमारे संसार को समझने पहचानने के लिये भी एक अच्छा माध्यम बनने की क्षमता रखती है। इसलिए '**रुचिरा**' शृंखला की तीनों पुस्तकों में आप क्रमशः साहित्य में चली आ रही विविध धाराओं की छवियाँ पाएँगे। इसमें दूसरी भाषाओं से अनूदित अंश भी लिए गए हैं।

रुचिरा प्रथमो भागः में कुल 15 पाठ हैं। इनमें पाँच पद्यपाठ हैं और शेष गद्यपाठ। *कृषिकाः कर्मवीराः* शीर्षक गीत में भारत के स्त्री एवं पुरुष किसान दोनों की बात की गई है। सामान्य तौर पर स्त्री को किसान के रूप में नहीं देखा जाता, जबकि वास्तविकता यह है कि खेती के अधिकांश कामों में स्त्रियों का श्रम लगता है। *विमानयानं रचयाम* ऐसा पद्य है जिससे बालक रचयाम द्वारा अपनी कल्पनाओं में रंग भरते हैं। *सूक्तिस्तबकः* पाठ में परम्परा से चली



आ रही सूक्तियों का संकलन इस प्रकार किया गया है कि वे विद्यार्थियों में, जीवन की बँधी–बँधाई दृष्टि देने का माध्यम न बनें। उदाहरण के तौर पर पहली ही सूक्ति यह बताती है कि कोई भी कार्य करने से सिद्ध होता है केवल कामना करने से नहीं। जिस प्रकार सोते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं प्रवेश नहीं करता। भाव यह कि वयस्क केन्द्रित ज्ञान मात्र की प्रतिष्ठा पाठ्यपुस्तक द्वारा न हो, इसका ध्यान रखा गया है।

गद्यात्मक पाठों में तीन कथाएँ हैं, दो निबन्ध पाठ हैं और दो संवादात्मक पाठ। *बकस्य प्रतीकारः*, *दशमः त्वम्ऽसि* और *अहह आः च* शीर्षक तीन कथाएँ हैं। *बकस्य प्रतीकारः* कथा लोक प्रचलित है। सम्भव है कि विद्यार्थियों ने अपनी घर–बाहर की भाषाओं में इस कथा के विविध संस्करण सुने–पढ़े होंगे। *दशमः त्वम्ऽसि* कथा में एक पथिक बच्चों को गिनती गिनने में सहयोग करता है। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से लेकर व्यवहार तक में बच्चे–बच्चियों तथा वयस्कों की भूमिका सहयोगी की होती है। *अहह आः च* एक कश्मीरी लोककथा है। लोकबुद्धि सत्ता और उसके शोषणतन्त्र को चुनौती देती है, यह इस पाठ से उभरकर साफ आता है।

निबंधात्मक दो पाठ हैं *समुद्रतटः* और *पुष्पोत्सवः*। समुद्रतट केवल पर्यटन स्थल नहीं है। यह आजीविका से भी जुड़ा है, इसका संकेत इस पाठ में मिलता है। *पुष्पोत्सवः* (फूल वालों की सैर) एक ऐसा उत्सव है जो भारत की मिली–जुली संस्कृति का प्रतीक है। हालाँकि यह मेला बड़े पैमाने पर नहीं मनाया जाता, परन्तु यह महत्त्वपूर्ण है। यह पाठ संस्कृत का समकालीन जीवन से जुड़ाव भी प्रदर्शित करता है। संवादात्मक पाठों में *क्रीडास्पर्धा* नामक पाठ का संग्रह है। इसमें बच्चे स्कूल में होनेवाले खेल की प्रतियोगिताओं की चर्चा करते हैं। ये जो बच्चे हैं वे समाज के विभिन्न समुदायों के हैं। उनमें पूरन नाम के एक बच्चे की विशेष आवश्यकताएँ हैं। अभी तक संस्कृत में विशेष आवश्यकताओं के लिए विकलांग शब्द का प्रयोग किया जा रहा है। परन्तु इस शब्द से हीनता का बोध होता है। इसकी जगह संस्कृत में *अन्यथासमर्थः* पद का प्रयोग यहाँ किया गया है। कारण, यह पुस्तक भाषा–शिक्षण का प्रथम सोपान ही है। उत्तरोत्तर कक्षाओं में भाषा कौशल सीखते हुए विद्यार्थी अपेक्षाकृत जटिल अभिव्यक्तियों को सहज रूप से ग्रहण कर पाएँगे।

इस पुस्तक के प्रारंभिक तीन पाठों में ऐसे शब्दों को समेटने का प्रयास किया गया है जो विद्यार्थियों के दैनंदिन जीवन से जुड़े हैं। कुछ रूढ़िबद्ध धारणाओं से अलग हटकर नयी



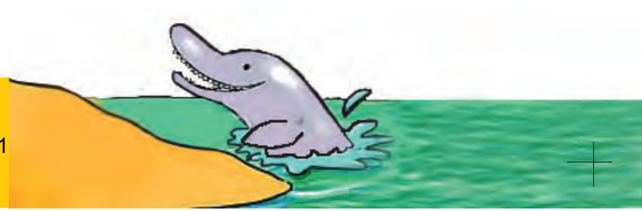
भूमिकाओं में लोगों को दिखाया गया है। यथा *चालिका* शब्द। इसके साथ दिया गया चित्र अर्थ का विस्तार करते हुए टैक्सी चलाती स्त्रियों को दर्शाता है। यद्यपि सामाजिक रूढ़ियों के कारण उनकी संख्या कम है।

कठिन शब्दों का अर्थ-बोध कराने हेतु छात्रों की सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में दिया गया शब्दार्थ (संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी) इस पुस्तक की विशेषता है। पुस्तक के अन्त में *परिशिष्ट* रूप में कारक और विभक्तियों का सामान्य परिचय दिया गया है जिससे छात्र इनके अन्तर को समझ सकें। विद्यार्थी पाठों में उठाए गए विचारों पर ध्यान दें और अपने अनुसार उसे समझने का प्रयास करें, यही अपेक्षा है। इसमें शिक्षक-शिक्षिकाओं की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है।

शिक्षक की भूमिका

कोई भी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक कितनी ही वैज्ञानिक और रुचिपूर्ण क्यों न हो, अध्यापन-कार्य में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। जहाँ अध्यापन की सफलता के लिए तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है, वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए यथावसर दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं उनका विद्यार्थियों से अभिनय भी कराया जा सकता है।

यद्यपि इस संकलन को विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, तथापि इसको और अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का हम सतत स्वागत करेंगे।



गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।



पाठानुक्रमणिका



मङ्गलम्

अहं नमामि मातरम्
गुरुं नमामि सादरम् ।।1।।
स्वयं पठामि सर्वदा
प्रियं वदामि सर्वदा ।।2।।
हितं करोमि सर्वदा
शुभं करोमि सर्वदा ।।3।।
विभुं नमामि सादरम्
गुरुं नमामि सादरम् ।।4।।
चलामि नीति-सत्पथे
हरामि मातृभू-व्यथाम् ।।5।।
दधामि साधुताव्रतम्
सृजामि कीर्तिसत्कथाम् ।।6।।
प्रभुं नमामि सादरम्
अहं नमामि मातरम् ।।7।।

इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणवः'

प्रथमः पाठः

शब्दपरिचयः-I



एषः कः?

एषः चषकः।

किम् एषः बृहत्?

न, एषः लघुः।

सः कः?

सः सौचिकः।

सौचिकः किं करोति?

किं सः खेलति?

न, सः वस्त्रं सीव्यति।





एतौ कौ?

एतौ शुनकौ स्तः।

किम् एतौ गर्जतः?

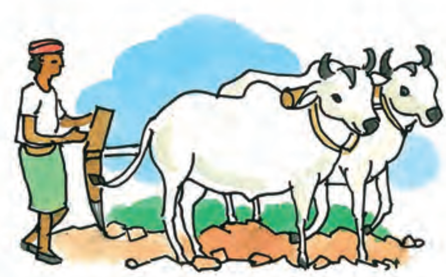
न, एतौ उच्चैः बुक्कतः।

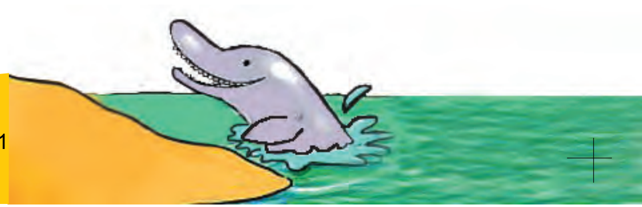
तौ कौ?

तौ बलीवर्दौ स्तः।

किं तौ धावतः?

न, तौ क्षेत्रं कर्षतः।

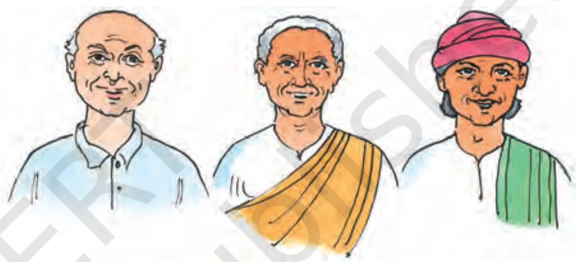






एते के?
एते स्यूताः सन्ति।
किम् एते हरितवर्णाः?
नहि, एते नीलवर्णाः सन्ति।

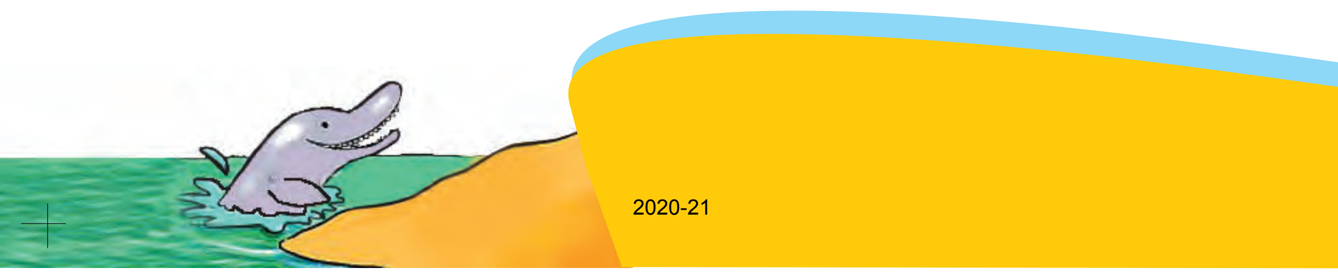
ते के?
ते वृद्धाः सन्ति।
किं ते गायन्ति?
नहि ते हसन्ति।





शब्दार्थाः

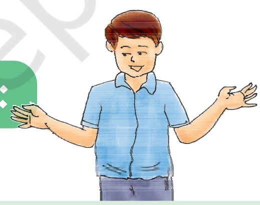
चषकः	–	गिलास	glass
बृहत्	–	बड़ा	large
सौचिकः	–	दर्जी	tailor
खेलति	–	खेलता है	play
सीव्यति	–	सिलाई करता है	sews
शुनकौ	–	दो कुत्ते	two dogs
गर्जतः	–	गरजते हैं	roar
उच्चैः	–	जोर से	loudly





एतौ	–	ये दोनों	these two
बुक्कतः	–	भौंकते हैं	bark
बलीवर्दौ	–	दो बैल	two oxen
धावतः	–	दौड़ते हैं	run
कर्षतः	–	जोतते हैं, जोत रहे हैं	plough
वृद्धाः	–	बूढ़े	old men
गायन्ति	–	गाते हैं, गायन करते हैं	sing
हसन्ति	–	हँसते हैं	laugh
स्यूताः	–	थैले	bags
हरितवर्णाः	–	हरे रंग के	of green colour
नीलवर्णाः	–	नीले रंग के	of blue clour

अभ्यासः



1. (क) उच्चारणं कुरुत।

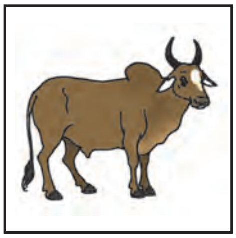
छात्रः	गजः	घटः
शिक्षकः	मकरः	दीपकः
मयूरः	बिडालः	अश्वः
शुकः	मूषकः	चन्द्रः
बालकः	चालकः	गायकः



(ख) चित्राणि दृष्ट्वा पदानि उच्चारयत।



कृषकः



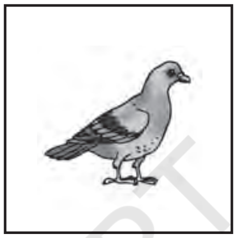
वृषभः



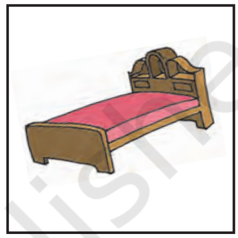
भल्लूकः



मण्डूकः



कपोतः



पर्यङ्कः



दूरभाषः



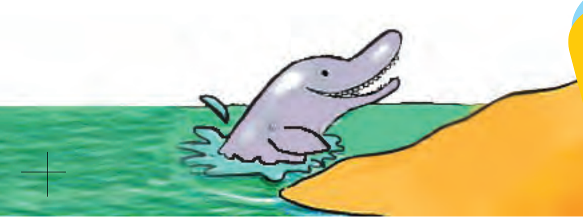
काकः



सौचिकः

2. (क) वर्णसंयोजनेन पदं लिखत–

यथा– च् + अ + ष् + अ + क् + अः	=	चषकः
स् + औ + च् + इ + क् + अः	=	
श् + उ + न् + अ + क् + औ	=	
ध् + आ + व् + अ + त् + अः	=	





व् + ऋ + द् + ध् + आः = [ ]

ग् + आ + य् + अ + न् + त् + इ = [ ]

(ख) पदानां वर्णविच्छेदं प्रदर्शयत-

यथा- लघुः = ल् + अ + घ् + उः
ल घुः

सीव्यति = ...

वर्णाः = ...

कुक्कुरौ = ...

मयूराः = ...

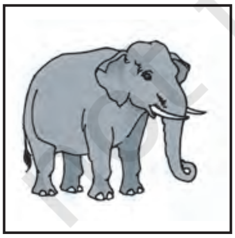
बालकः = ...

3. उदाहरणं दृष्ट्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा-

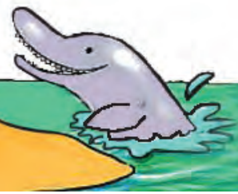
चषकः	चषकौ	चषकाः
....	बलीवर्दौ	....
शुनकः	....	....
....	....	मृगाः
....	सौचिकौ	....
मयूरः	....	....

4. चित्राणि दृष्ट्वा संस्कृतपदानि लिखत-


....


....


....







....

5. चित्रं दृष्ट्वा उत्तरं लिखत-



यथा- बालकः किं करोति?

बालकः पठति।



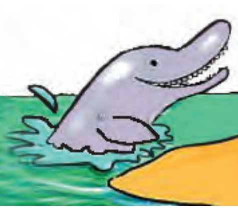
अश्वौ किं कुरुतः?

....

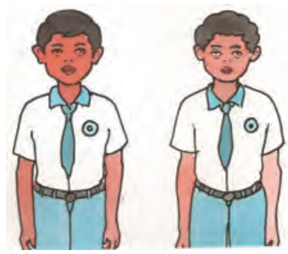


कुक्कुराः किं कुर्वन्ति?

....







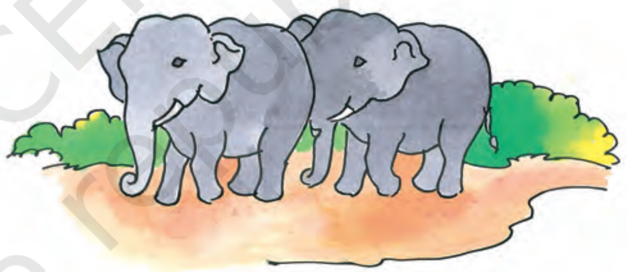
छात्रौ किं कुरुतः?

....



कृषकः किं करोति?

....

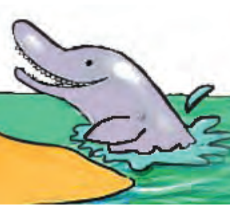


गजौ किं कुरुतः?

....

6. पदानि संयोज्य वाक्यानि रचयत–

गजाः	नृत्यन्ति
सिंहौ	गायति
गायकः	पठतः
बालकौ	चलन्ति
मयूराः	गर्जतः



7. मञ्जूषातः पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

नृत्यन्ति	गर्जतः	धावति	चलतः	फलन्ति	खादति

(क) मयूराः ....। (घ) सिंहौ ....।

(ख) गजौ ....। (ङ) वानरः ....।

(ग) वृक्षाः ....। (च) अश्वः ....।

8. सः, तौ, ते इत्येतेभ्यः उचितं सर्वनामपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा- अश्वः धावति - **सः** धावति।

(क) गजाः चलन्ति। - .... चलन्ति।

(ख) छात्रौ पठतः। - .... पठतः।

(ग) वानराः क्रीडन्ति। - .... क्रीडन्ति।

(घ) गायकः गायति। - .... गायति।

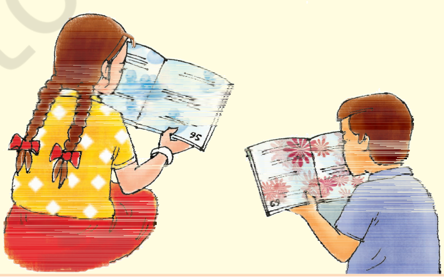
(ङ) मयूराः नृत्यन्ति। - .... नृत्यन्ति।

ध्यातव्यम्

(क) संस्कृते त्रीणि लिङ्गानि भवन्ति- पुँल्लिङ्गं, स्त्रीलिङ्गं, नपुंसकलिङ्गञ्च।

(ख) संस्कृते त्रयः पुरुषाः भवन्ति- प्रथमपुरुषः, मध्यमपुरुषः, उत्तमपुरुषश्च।

(ग) संस्कृते त्रीणि वचनानि भवन्ति- एकवचनं, द्विवचनं, बहुवचनञ्च।

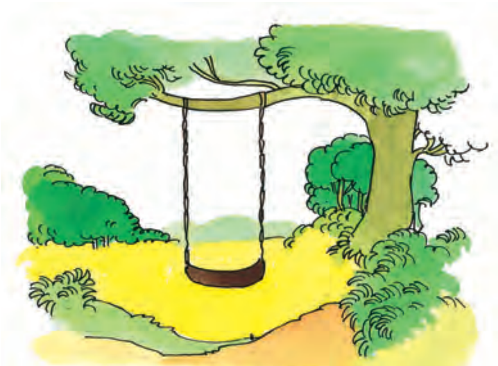




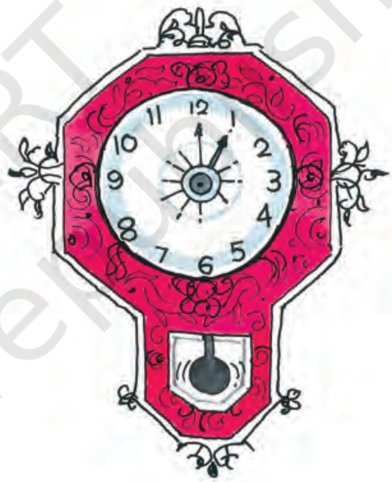
0649CH02

द्वितीयः पाठः

शब्दपरिचयः-II



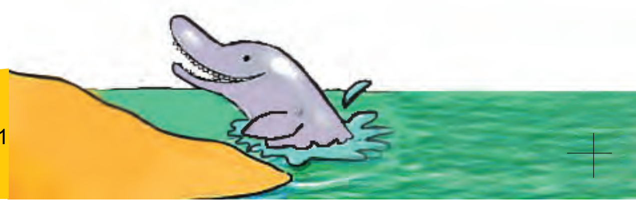
एषा का?
एषा दोला।
दोला कुत्र अस्ति?
दोला उपवने अस्ति।



सा का?
सा घटिका।
घटिका किं सूचयति?
घटिका समयं सूचयति।



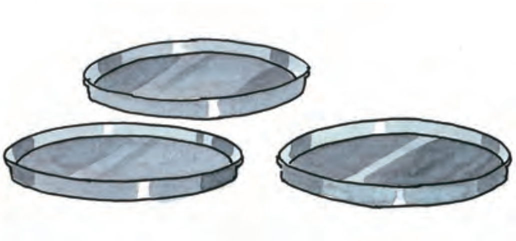
एते के?
किम् एते कोकिले?
न, एते चटके।
चटके किं कुरुतः?
एते विहरतः।



ते के?
ते चालिके स्तः।
ते किं कुरुतः?
ते वाहनं चालयतः।



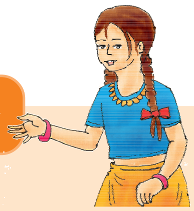




एताः काः?
एताः स्थालिकाः।
किम् एताः गोलाकाराः?
आम्, एताः गोलाकाराः एव।

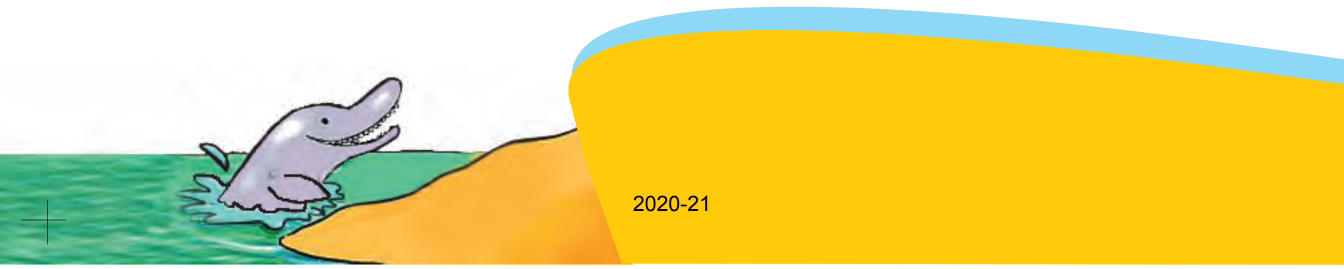
ताः काः?
ताः अजाः।
ताः किं कुर्वन्ति?
ताः चरन्ति।





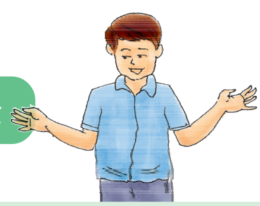
शब्दार्थाः

एषा	–	यह (स्त्री.)	this
दोला	–	झूला	swing
कुत्र	–	कहाँ	where
उपवने	–	बगीचे में	in the garden
घटिका	–	घड़ी	clock





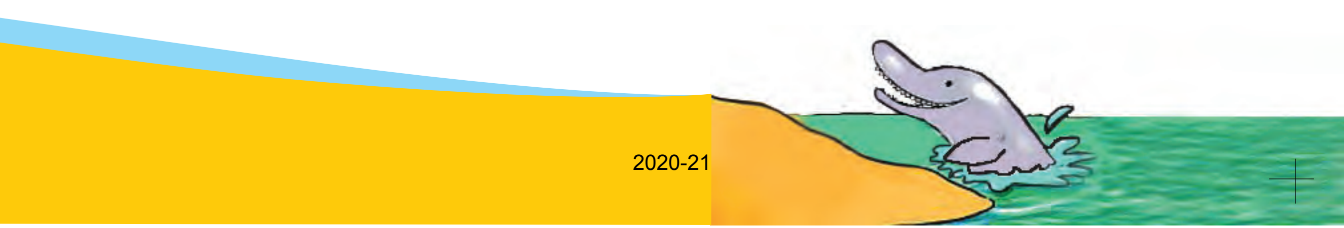
सूचयति	–	सूचित करती है	indicates
कोकिले	–	दो कोयल	two cuckoos
एते	–	ये (द्विवचन, स्त्री.)	these
चटके	–	दो गौरैया	two sparrows
कुरुतः	–	करती हैं	do
विहरतः	–	फुदक रही हैं	hopping
चालिके	–	दो महिला ड्राईवर	female driver
चालयतः	–	चलाती हैं	drive
एताः	–	ये (बहुवचन, स्त्री.)	these
स्थालिकाः	–	थालियाँ	plates
आम्	–	हाँ	yes
एव	–	ही	only
अजाः	–	बकरियाँ	goats
चरन्ति	–	चरती हैं	graze



अभ्यासः

1. (क) उच्चारणं कुरुत।

छात्रा	लता	प्रयोगशाला	लेखिका
शिक्षिका	पेटिका	माला	सेविका
नौका	छुरिका	कलिका	गायिका



(ख) चित्राणि दृष्ट्वा पदानि उच्चारयत।


सूचिका


पिपीलिका

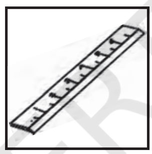

कुञ्चिका


द्विचक्रिका


उत्पीठिका


मक्षिका

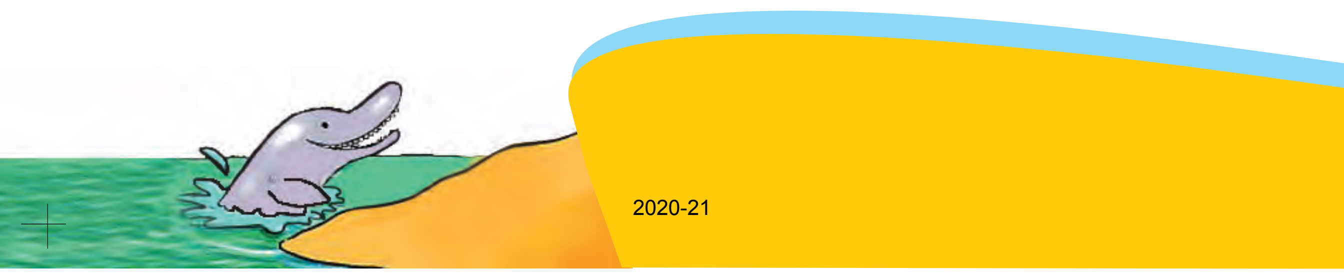

अग्निपेटिका


मापिका


वीणा

2. (क) वर्णसंयोजनं कृत्वा पदं कोष्ठके लिखत–

यथा– क् + उ + र् + उ + त् + अः	=	कुरुतः
उ + द् + य् + आ + न् + ए	=	
स् + थ् + आ + ल् + इ + क् + आ	=	
घ् + अ + ट् + इ + क् + आ	=	
स् + त् + र् + ई + ल् + इ + ङ् + ग् + अः	=	
म् + आ + प् + इ + क् + आ	=	





(ख) पदानां वर्णविच्छेदं प्रदर्शयत-

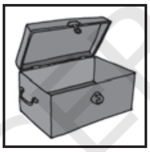
यथा- कोकिले = क् + ओ + क् + इ + ल् + ए

(को) (कि) (ले)

चटके	=	....
धाविकाः	=	....
कुञ्चिका	=	....
खट्वा	=	....
छुरिका	=	....

3. चित्रं दृष्ट्वा संस्कृतपदं लिखत-

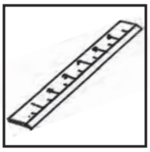

....


....


....

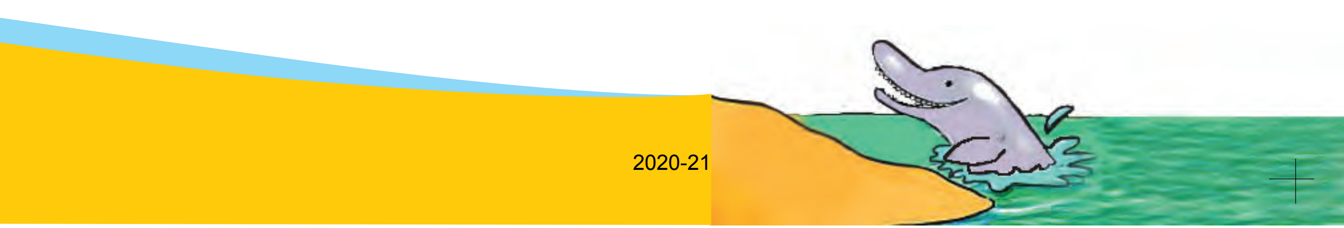

....


....


....

4. वचनानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	लता	लते	लताः
	गीता	....	....
	....	पेटिके	....



....	....	खट्वाः
सा	....	....
....	रोटिके	....

5. कोष्ठकात् उचितं शब्दं चित्वा वाक्यं पूरयत-

यथा- **बालिका** पठति। (बालिका/बालिकाः)

(क) .... चरतः। (अजाः/अजे)

(ख) .... सन्ति। (द्विचक्रिके/द्विचक्रिकाः)

(ग) .... चलति। (नौके/नौका)

(घ) .... अस्ति। (सूचिके/सूचिका)

(ङ) .... उत्पतन्ति। (मक्षिकाः/मक्षिके)

6. सा, ते, ताः इत्येतेभ्यः उचितं सर्वनामपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा- लता अस्ति। - **सा** अस्ति।

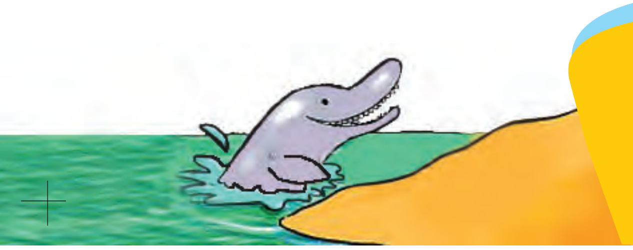
(क) महिलाः धावन्ति। - .... धावन्ति।

(ख) सुधा वदति। - .... वदति।

(ग) जवनिके दोलतः। - .... दोलतः।

(घ) पिपीलिकाः चलन्ति। - .... चलन्ति।

(ङ) चटके कूजतः। - .... कूजतः।





7. मञ्जूषातः कर्तृपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

लेखिका	बालकः	सिंहाः	त्रिचक्रिका	पुष्पमालाः

(क) .... सन्ति।

(ख) .... पश्यति।

(ग) .... लिखति।

(घ) .... गर्जन्ति।

(ङ) .... चलति।

8. मञ्जूषातः कर्तृपदानुसारं क्रियापदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

गायतः	नृत्यति	लिखन्ति	पश्यन्ति	विहरतः

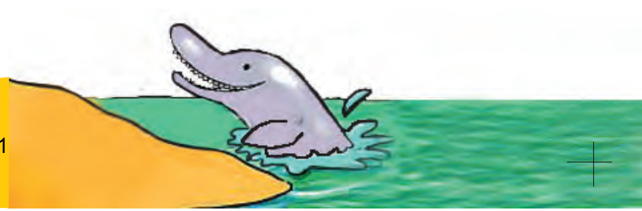
(क) सौम्या ....।

(ख) चटके ....।

(ग) बालिके ....।

(घ) छात्राः ....।

(ङ) जनाः ....।



0649CH03

तृतीयः पाठः

शब्दपरिचयः-III



एतत् किम्?
एतत् खनित्रम् अस्ति?
श्रमिका खनित्रं चालयति।



तत् किम्?
तत् विश्रामगृहम् अस्ति।
किम् अत्र भित्तिकम् अस्ति?
अत्र भित्तिकं न अस्ति।



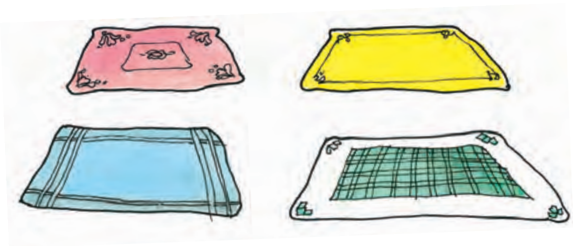
एते के?
एते अङ्गुलीयके स्तः।
सुवर्णकारः अङ्गुलीयके रचयति।



ते के?
ते बसयाने स्तः।
ते बसयाने कुत्र गच्छतः?
ते रेलस्थानकं गच्छतः।







एतानि कानि?
एतानि करवस्त्राणि सन्ति।
किम् एतानि पुराणानि?
न, एतानि तु नूतनानि।

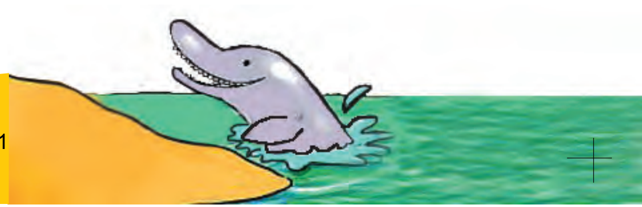


तानि कानि?
तानि कदलीफलानि सन्ति।
किं तानि मधुराणि?
आम्, तानि मधुराणि पोषकाणि च।



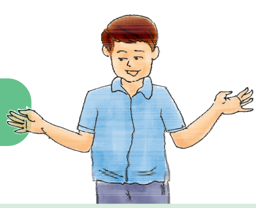
शब्दार्थाः

एतत् (नपुं.)	–	यह	it
विश्रामगृहम्	–	विश्रामालय	rest house
अत्र	–	यहाँ	here
भित्तिकम्	–	घेरा, दीवार	fence, wall
खनित्रम्	–	कुदाल, खन्ती	digging axe
श्रमिका	–	मजदूरनी	female labour
चालयति	–	चलाती है	moves/uses
एते	–	ये दोनों	these two
बसयाने	–	दो बसें	two buses



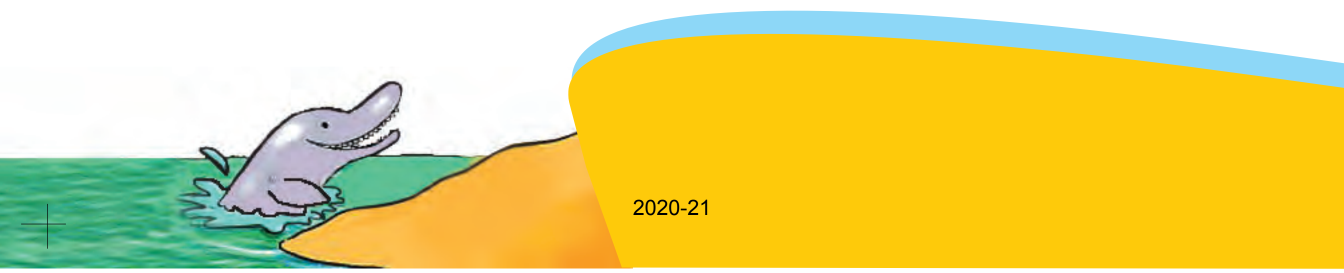
कुत्र	-	कहाँ	where
गच्छतः	-	जा रहे हैं/जा रही हैं	are going
रेलस्थानकम्	-	स्टेशन	railway station
अङ्गुलीयके	-	दो अँगूठियाँ	two rings
स्तः	-	हैं	are
सुवर्णकारः	-	सुनार/सोनार	goldsmith
एतानि	-	ये (नपुं., बहु.)	these
कदलीफलानि	-	केले के फल	bananas
मधुराणि	-	मीठे/अच्छे	sweet
पोषकाणि	-	पोषक	naurishment
करवस्त्राणि	-	रुमाल	handkerchiefs
पुराणानि	-	पुराने	old
नूतनानि	-	नये	new

अभ्यासः



1. (क) उच्चारणं कुरुत।

फलम्	गृहम्	पात्रम्	पुष्पम्
द्वारम्	विमानम्	कमलम्	पुस्तकम्
सूत्रम्	छत्रम्	भवनम्	जलम्





(ख) चित्राणि दृष्ट्वा पदानि उच्चारयत।



पर्णम्



क्रीडनकम्



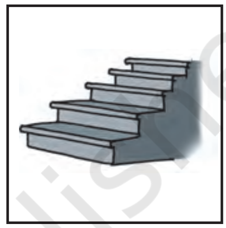
नारिकेलम्



सङ्गणकम्



वातायनम्



सोपानम्



उद्यानम्



उपनेत्रम्



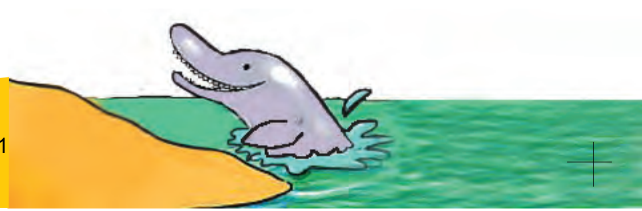
कङ्कतम्

2. (क) वर्णसंयोजनं कृत्वा पदं कोष्ठके लिखत-

यथा- प् + अ + र् + ण् + अ + म् = पर्णम्

ख् + अ + न् + इ + त् + र् + अ + म् = ____

प् + उ + र् + आ + ण् + आ + न् + इ = ____



प् + ओ + ष् + अ + क् + आ + ण् + इ =

क् + अ + ङ् + क् + अ + त् + अ + म् =

(ख) अधोलिखितानां पदानां वर्णविच्छेदं कुरुत-

यथा- व्यजनम् = व् + य् + अ + ज् + अ + न् + अ + म्

पुस्तकम् = ...

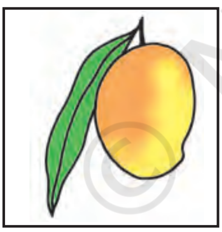
भित्तिकम् = ...

नूतनानि = ...

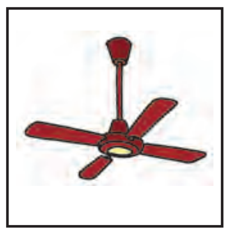
वातायनम् = ...

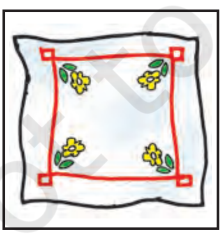
उपनेत्रम् = ...

3. चित्राणि दृष्ट्वा संस्कृतपदानि लिखत-


....


....


....


....


....


....





4. चित्रं दृष्ट्वा उत्तरं लिखत-

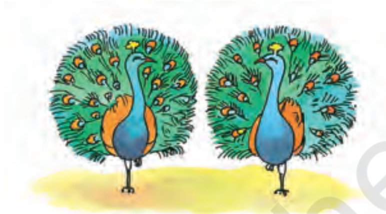
यथा- किं पतति?

....



मयूरौ किं कुरुतः।

....



एते के स्तः?

....



बालिकाः किं कुर्वन्ति?

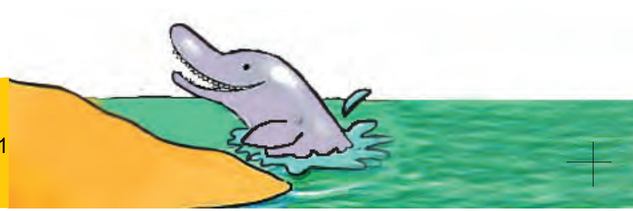
....



कानि विकसन्ति?

....





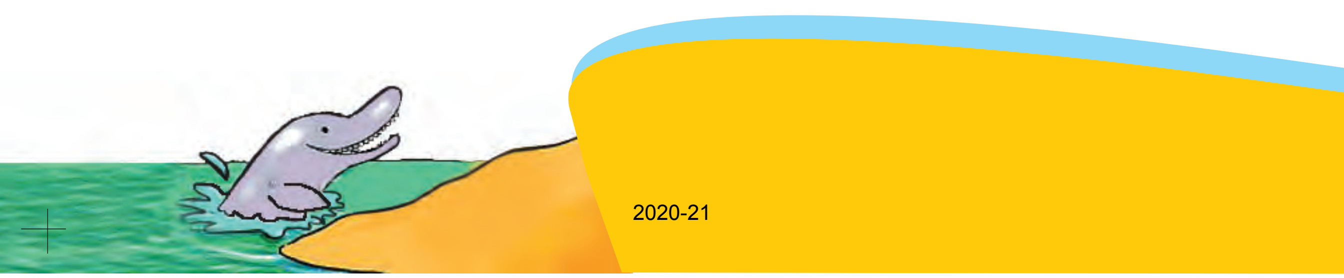


5. निर्देशानुसारं वाक्यानि रचयत-

यथा- एतत् पतति।	(बहुवचने)	-	**एतानि पतन्ति।**
(क) एते पर्णे स्तः।	(बहुवचने)	-	....
(ख) मयूरः नृत्यति।	(बहुवचने)	-	....
(ग) एतानि यानानि।	(द्विवचने)	-	....
(घ) छात्रे लिखतः।	(बहुवचने)	-	....
(ङ) नारिकेलं पतति।	(द्विवचने)	-	....

6. उचितपदानि संयोज्य वाक्यानि रचयत-

कोकिले	विकसति
पवनः	नृत्यन्ति
पुष्पम्	उत्पतति
खगः	वहति
मयूराः	गर्जन्ति
सिंहाः	कूजतः



0649CH04

चतुर्थः पाठः

विद्यालयः



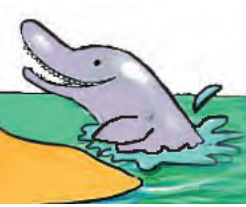
एषः विद्यालयः।
अत्र छात्राः शिक्षकाः,
शिक्षिकाः च सन्ति।



एषा सङ्गणकयन्त्र–प्रयोगशाला अस्ति।
एतानि सङ्गणकयन्त्राणि सन्ति।



एतत् अस्माकं विद्यालयस्य
उद्यानम् अस्ति।
उद्याने पुष्पाणि सन्ति।
वयम् अत्र क्रीडामः पठामः च।





ऋचा – तव नाम किम्?
प्रणवः – मम नाम प्रणवः। तव नाम किम्?
ऋचा – मम नाम ऋचा। त्वं कुत्र पठसि?
प्रणवः – अहम् अत्र एव पठामि।
ऋचा – अहम् अपि अत्र एव पठामि।
इदानीम् आवां मित्रे स्वः।

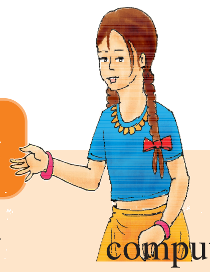


शिक्षिका – छात्राः! यूयं किं कुरुथ?
छात्राः – आचार्ये! वयं गच्छामः।
शिक्षिका – यूयं कुत्र गच्छथ।
छात्राः – वयं सभागारं गच्छामः।
शिक्षिका – युष्माकं पुस्तकानि कुत्र सन्ति?
छात्राः – अस्माकं पुस्तकानि अत्र सन्ति।



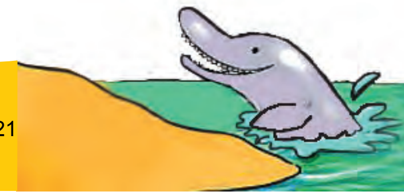
शिक्षकः– छात्रौ! युवां किं कुरुथः?
छात्रौ – आचार्य! आवां श्लोकं गायावः।
शिक्षकः – शोभनम्, किं युवां श्लोकं न लिखथः?
छात्रौ – आवां लिखावः, पठावः, गायावः, चित्राणि अपि रचयावः।
शिक्षकः– बहुशोभनम्?





शब्दार्थाः

सङ्गणकयन्त्राणि	–	(अनेक) कम्प्यूटर	computer
अस्माकम्	–	हमारा/हम लोगों का	our
वयम् (सर्वनाम)	–	हम सब	we
तव	–	तेरा	your
मम्	–	मेरा	my/mine
त्वम् (सर्वनाम)	–	तुम	you
अहम् (सर्वनाम)	–	मैं	I/my self
एव (अव्यय)	–	ही	only
अपि (अव्यय)	–	भी	also
इदानीम् (अव्यय)	–	अब/इस समय	now
आवाम् (सर्वनाम)	–	हम दोनों	we two
मित्रे (नपुं)	–	(दो) मित्र	two friends
स्वः	–	(हम दोनों) हैं	(we two) are
यूयम् (सर्वनाम)	–	तुम सब	you (all)
आचार्ये!	–	शिक्षिका (सम्बोधन)	oh teacher!
युष्माकम्	–	तुम्हारा/तुम लोगों का	your/of you (all)
कुत्र	–	कहाँ	where
सभागारम्	–	सभागार को	to the assembly/auditorium
युवाम् (सर्वनाम)	–	तुम दोनों	you two
आचार्य!	–	गुरु/शिक्षक (सम्बोधन)	oh teachre!
शोभनम्	–	अच्छा	good/fine
गायावः	–	(हम दो) गाते हैं/गाती हैं	we two sing/are singing
रचयावः	–	(हम दो) बनाते हैं/बनाती है	we two make/are making





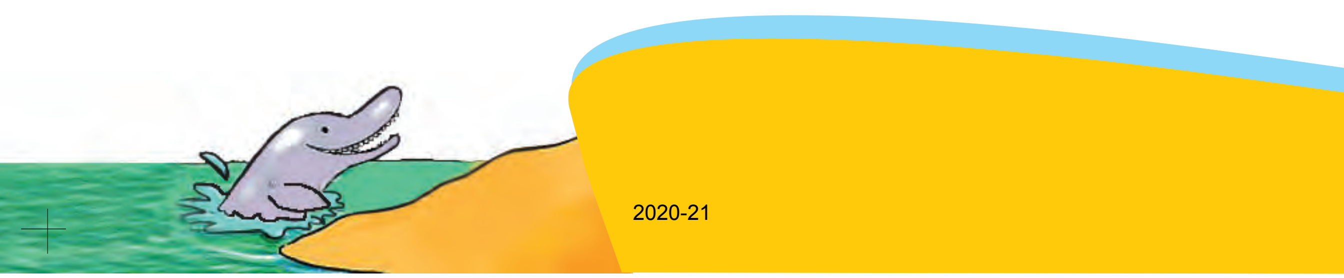
अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत।

अहम्	आवाम्	वयम्
माम्	आवाम्	अस्मान्
मम	आवयोः	अस्माकम्
त्वम्	युवाम्	यूयम्
त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तव	युवयोः	युष्माकम्

2. निर्देशानुसारं परिवर्तनं कुरुत-

यथा- अहं पठामि।	–	(बहुवचने)	–	**वयं पठामः।**
(क) अहं नृत्यामि।	–	(बहुवचने)	–	....
(ख) त्वं पठसि।	–	(बहुवचने)	–	....
(ग) युवां क्रीडथः।	–	(एकवचने)	–	....
(घ) आवां गच्छावः।	–	(बहुवचने)	–	....
(ङ) अस्माकं पुस्तकानि।	–	(एकवचने)	–	....
(च) तव गृहम्।	–	(द्विवचने)	–	....





3. कोष्ठकात् उचितं शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) .... पठामि। (वयम्/अहम्)

(ख) .... गच्छथः। (युवाम्/यूयम्)

(ग) एतत् .... पुस्तकम्। (माम्/मम)

(घ) .... क्रीडनकानि। (युष्मान्/युष्माकम्)

(ङ) .... छात्रे स्वः। (वयम्/आवाम्)

(च) एषा.............................. लेखनी। (तव/त्वाम्)

4. क्रियापदैः वाक्यानि पूरयत–

पठसि	धावामः	गच्छावः	क्रीडथः	लिखामि	पश्यथ

यथा– अहं पठामि।

(क) त्वं ....

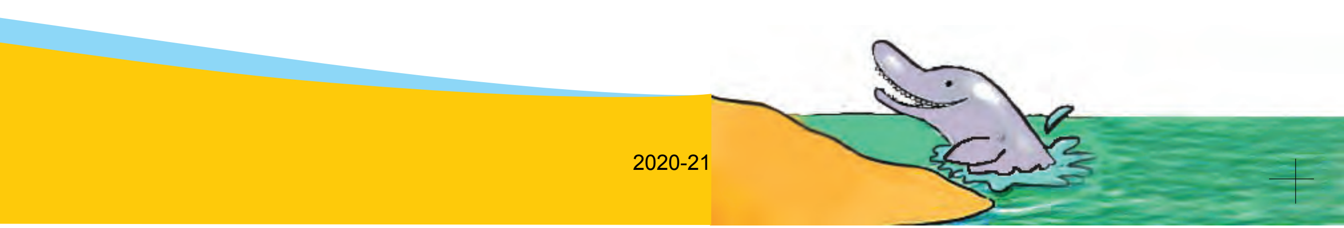
(ख) आवां ....

(ग) यूयं ....

(घ) अहं ....

(ङ) युवां ....

(च) वयं ....





5. उचितपदैः वाक्यनिर्माणं कुरुत-

मम	तव	आवयोः	युवयोः	अस्माकम्	युष्माकम्

यथा- एषा **मम** पुस्तिका।

(क) एतत् .... गृहम्।

(ख) .... मैत्री दृढा।

(ग) एषः .... विद्यालयः।

(घ) एषा .... अध्यापिका।

(ङ) भारतम् .... देशः।

(च) एतानि .... पुस्तकानि।

6. एकवचनपदस्य बहुवचनपदं, बहुवचनपदस्य एकवचनपदं च लिखत-

यथा- एषः – एते

(क) सः – ....

(ख) ताः – ....

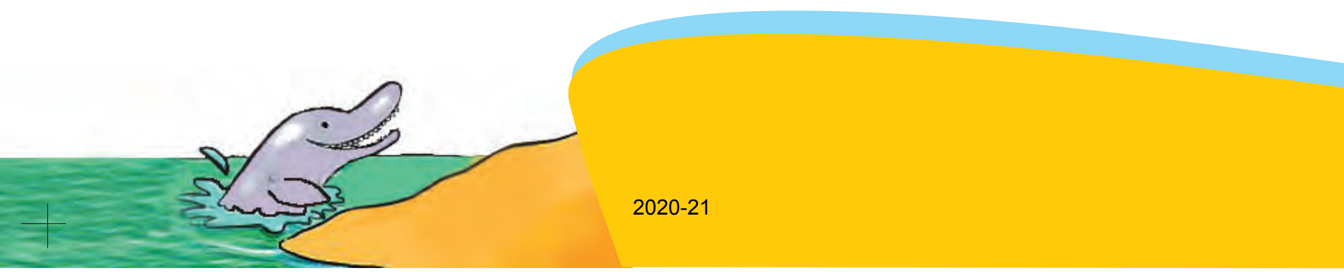
(ग) एताः – ....

(घ) त्वम् – ....

(ङ) अस्माकम् – ....

(च) तव – ....

(छ) एतानि – ....





7. (क) वार्तालापे रिक्तस्थानानि पूरयत–

यथा– प्रियंवदा – शकुन्तले! **त्वं** किं करोषि?

शकुन्तला – प्रियंवदे! .... नृत्यामि, ... किं करोषि?

प्रियंवदा – शकुन्तले! .... गायामि। किं ....न गायसि?

शकुन्तला – प्रियंवदे! .... न गायामि। .... तु नृत्यामि।

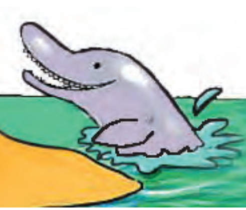
प्रियंवदा – शकुन्तले! किं .... माता नृत्यति।

शकुन्तला – आम्, ... माता अपि नृत्यति।

प्रियंवदा – साधु, ... चलावः।

(ख) उपयुक्तेन अर्थेन सह योजयत–

शब्दः	**अर्थ**
सा	तुम दोनों का
तानि	तुम सब
अस्माकम्	मेरा
यूयम्	वह (स्त्रीलिङ्ग)
आवाम्	तुम्हारा
मम	वे (नपुंसकलिङ्ग)
युवयोः	हम दोनों
तव	हमारा



0649CH05

पञ्चमः पाठः

वृक्षाः

वने वने निवसन्तो वृक्षाः।
वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः ॥1॥

शाखादोलासीना विहगाः।
तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः ॥2॥

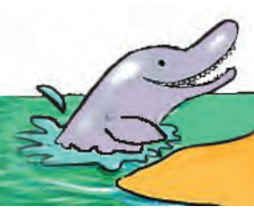
पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम्।
साधुजना इव सर्वे वृक्षाः ॥3॥

स्पृशन्ति पादैः पातालं च।
नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः ॥4॥

पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम्
कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः ॥5॥

प्रसार्य स्वच्छायासंस्तरणम्।
कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः। ॥6॥

डॉ. हर्षदेवमाधवः

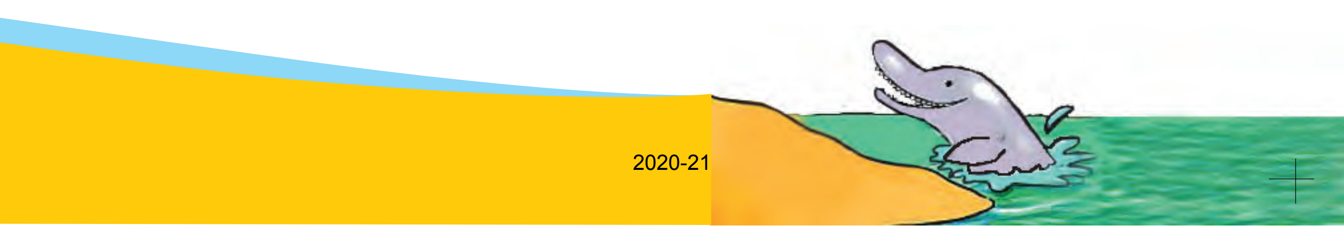




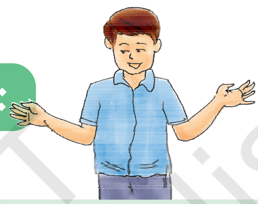


शब्दार्थाः

वने वने	–	प्रत्येक वन में	in each forest
निवसन्तः	–	रहते हुए/रहने वाले	living
रचयन्ति	–	रचते हैं, बनाते हैं	make
शाखा	–	डालियाँ, टहनियाँ	branches
दोला	–	झूला	swing
आसीनाः	–	बैठे हुए	sitting
विहगाः	–	पक्षीगण	birds
किमपि	–	कुछ भी	anything/something
कूजन्ति	–	कूकते हैं/कूकती हैं	chirp
सन्ततम्	–	निरन्तर/लगातार	always
साधुजनाः	–	तपस्वी लोग/सज्जन	sages
इव	–	की तरह	like
पिबन्ति	–	पीते हैं	drink
स्पृशन्ति	–	स्पर्श करते हैं	touch
नभः	–	आकाश को	the sky
शिरस्सु	–	सिर पर	on head
वहन्ति	–	ढोते हैं	carry
पयोदर्पणे	–	जलरूपी दर्पण/आईने में	in mirror-like water
स्वप्रतिबिम्बम्	–	अपने प्रतिबिम्ब को	one's own image
पश्यन्ति	–	देखते हैं	see, look at



कौतुकेन	-	आश्चर्य से	with wonder
प्रसार्य	-	फैलाकर	expanding
स्वच्छायासंस्तरणम् (स्व+छाया+संस्तरणम्)	-	अपनी छाया रूपी बिस्तरे को	own shadow's-bed
सत्कारम्	-	आदर	respect



अभ्यासः

1. वचनानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत-

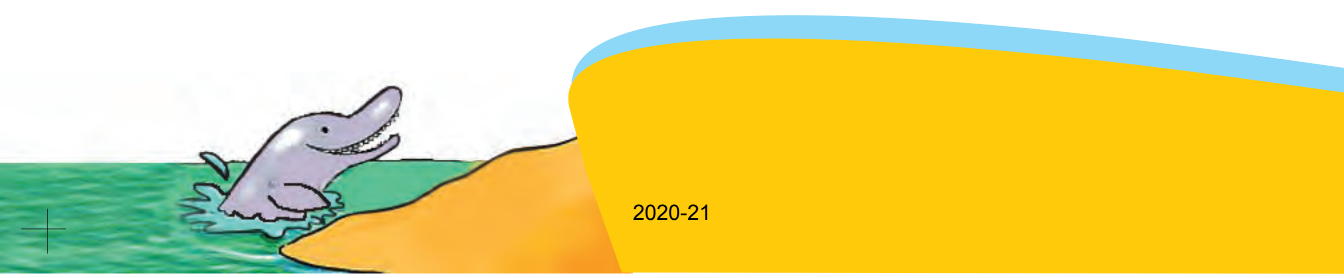
	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा-	वनम्	वने	वनानि
	....	जले	....
	बिम्बम्	....	....
यथा-	वृक्षम्	वृक्षौ	वृक्षान्
	....	....	पवनान्
	....	जनौ	....

2. कोष्ठकेषु प्रदत्तशब्देषु उपयुक्तविभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

यथा- अहं रोटिकां खादामि। (रोटिका)

(क) त्वं .... पिबसि। (जल)

(ख) छात्रः .... पश्यति। (दूरदर्शन)





(ग) वृक्षाः ....पिबन्ति। (पवन)

(घ) ताः .... लिखन्ति। (कथा)

(ङ) आवाम् .... गच्छावः। (जन्तुशाला)

3. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदानि चिनुत-

(क) वृक्षाः नभः शिरस्सु वहन्ति।

(ख) विहगाः वृक्षेषु कूजन्ति।

(ग) पयोदर्पणे वृक्षाः स्वप्रतिबिम्बं पश्यन्ति।

(घ) कृषकः अन्नानि उत्पादयति।

(ङ) सरोवरे मत्स्याः सन्ति।

4. प्रश्नानामुत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) वृक्षाः कैः पातालं स्पृशन्ति?

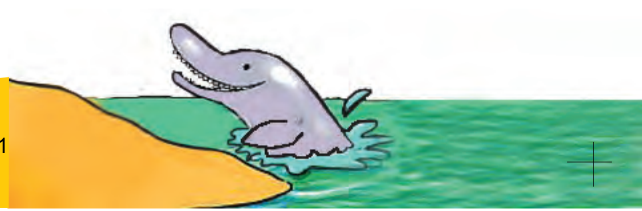
(ख) वृक्षाः किं रचयन्ति?

(ग) विहगाः कुत्र आसीनाः।

(घ) कौतुकेन वृक्षाः किं पश्यन्ति?

5. समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
	अश्वः	....	....





द्वितीया	सूर्यम्	सूर्यौ	सूर्यान्
	....	....	चन्द्रान्
तृतीया	विडालेन	विडालाभ्याम्	विडालैः
	....	मण्डूकाभ्याम्	....
चतुर्थी	सर्पाय	....	सर्पेभ्यः
	....	वानराभ्याम्	....
पञ्चमी	मोदकात्	....	....
	....	....	वृक्षेभ्यः
षष्ठी	जनस्य	जनयोः	जनानाम्
	....	....	शुकानाम्
सप्तमी	शिक्षके	....	शिक्षकेषु
	....	मयूरयोः	....
सम्बोधनम्	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!
	नर्तक!	....	....

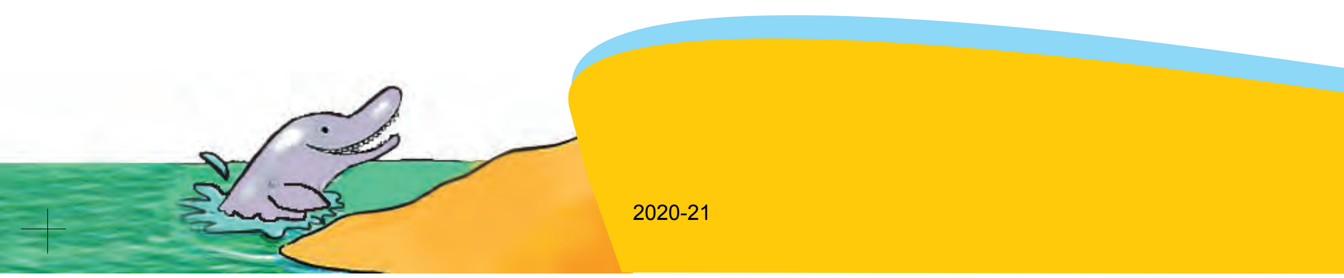
6. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत-

(क) गङ्गा, लता, यमुना, नर्मदा।

(ख) उद्यानम्, कुसुमम्, फलम्, चित्रम्।

(ग) लेखनी, तूलिका, चटका, पाठशाला।

(घ) आम्रम्, कदलीफलम्, मोदकम्, नारङ्गम्।



0649CH06

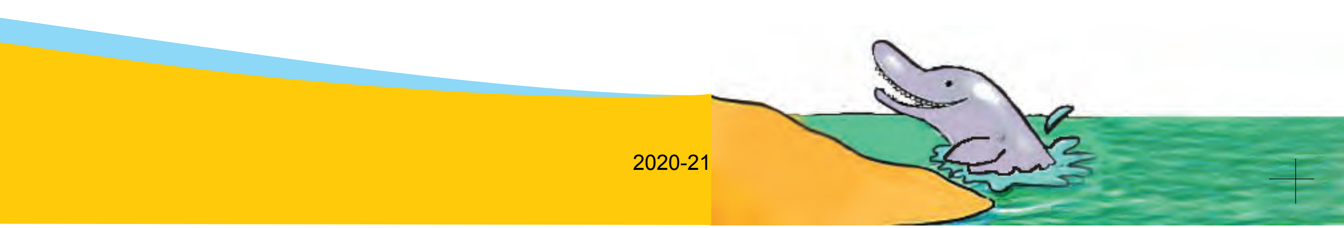
षष्ठः पाठः

समुद्रतटः

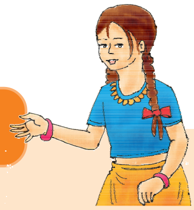


एषः समुद्रतटः। अत्र जनाः पर्यटनाय आगच्छन्ति। केचन तरङ्गैः क्रीडन्ति। केचन च नौकाभिः जलविहारं कुर्वन्ति। तेषु केचन कन्दुकेन क्रीडन्ति। बालिकाः बालकाः च बालुकाभिः बालुकागृहं रचयन्ति। मध्ये मध्ये तरङ्गाः बालुकागृहं प्रवाहयन्ति। एषा क्रीडा प्रचलति एव। समुद्रतटाः न केवलं पर्यटनस्थानानि। अत्र मत्स्यजीविनः अपि स्वजीविकां चालयन्ति।

अस्माकं देशे बहवः समुद्रतटाः सन्ति। एतेषु मुम्बई–गोवा–कोच्चि–कन्याकुमारी–विशाखापत्तनम्–पुरीतटाः अतीव प्रसिद्धाः सन्ति। गोवातटः विदेशिपर्यटकेभ्यः समधिकं रोचते। विशाखापत्तनम्–तटः वैदेशिकव्यापाराय प्रसिद्धः। कोच्चितटः नारिकेलफलेभ्यः ज्ञायते। मुम्बईनगरस्य जुहूतटे सर्वे जनाः स्वैरं विहरन्ति। चेन्नईनगरस्य मेरीनातटः देशस्य सागरतटेषु दीर्घतमः।

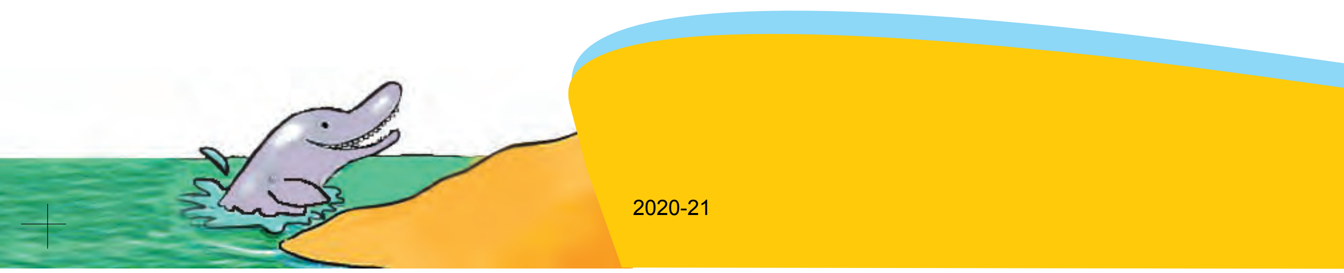


भारतस्य तिसृषु दिशासु समुद्रतटाः सन्ति। अस्माद् एव कारणात् भारतदेशः प्रायद्वीपः इति कथ्यते। पूर्वदिशायां बङ्गोपसागरः दक्षिणदिशायां हिन्दमहासागरः पश्चिमदिशायां च अरबसागरः अस्ति। एतेषां त्रयाणाम् अपि सागराणां सङ्गमः कन्याकुमारीतटे भवति। अत्र पूर्णिमायां चन्द्रोदयः सूर्यास्तं च युगपदेव द्रष्टुं शक्यते।



शब्दार्थाः

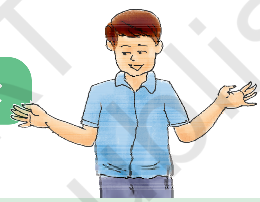
समुद्रतटः	-	समुद्र का किनारा	sea beach
पर्यटनाय	-	घूमने के लिये	for excursion
तरङ्गैः	-	लहरों से/ के साथ	with waves
नौकाभिः	-	नौकाओं के द्वारा	by the boats
जलविहारम्	-	जलक्रीडा	water game
बालुकाभिः	-	बालुओं से	with sands
बालुकागृहम्	-	बालू का घर, घरौंदा	sand-houselet
मध्ये-मध्ये	-	बीच-बीच में	at some interval
प्रवाहयन्ति	-	धो देते हैं, बहा देते हैं	wash out
प्रचलति एव	-	चलती ही रहती है	keeps going on
पर्यटनस्थानानि	-	घूमने की जगह	touristspot
मत्स्यजीविनः	-	मछुआरे	fishermen
स्वजीविकाम्	-	अपनी जीविका को	means of one's livelihood
चालयन्ति	-	चलाते हैं	causing to move
अतीव	-	बहुत अधिक	excessive





स्वैरम्	–	बे-रोक टोक/यथेच्छ	as one pleases
विहरन्ति	–	घूमते हैं/ टहलते हैं	roam
दीर्घतमः	–	सबसे लम्बा	longest
प्रायद्वीपः	–	तीन तरफ जल से घिरा भू भाग	peninsula
सङ्गमः	–	मिलन	confluence
युगपदेव(युगपत्+एव)	–	एक ही साथ	at the same time
द्रष्टुं शक्यते	–	देखा जा सकता है	may be seen

अभ्यासः



1. उच्चारणं कुरुत–

तरङ्गैः	मत्स्यजीविनः	विदेशिपर्यटकेभ्यः
सङ्गमः	तिसृषु	वैदेशिकव्यापाराय
प्रायद्वीपः	बङ्गोपसागरः	चन्द्रोदयः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत–

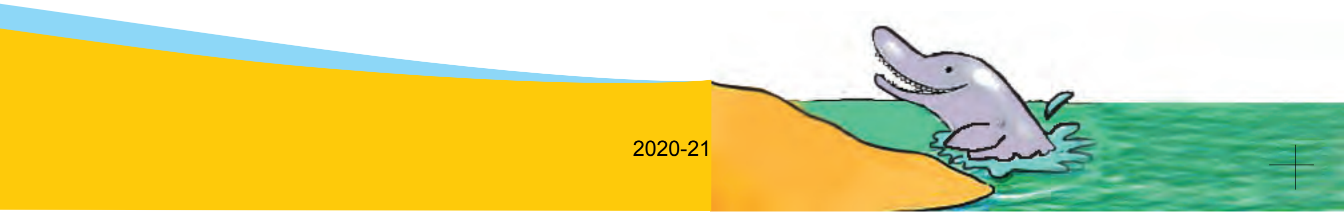
(क) जनाः काभिः जलविहारं कुर्वन्ति?

(ख) भारतस्य दीर्घतमः समुद्रतटः कः?

(ग) जनाः कुत्र स्वैरं विहरन्ति?

(घ) बालकाः बालुकाभिः किं रचयन्ति?

(ङ) कोच्चितटः केभ्यः ज्ञायते?





3. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

बङ्गोपसागरः	प्रायद्वीपः	पर्यटनाय	क्रीडा	सङ्गमः

(क) कन्याकुमारीतटे त्रयाणां सागराणां .... भवति।

(ख) भारतदेशः .... इति कथ्यते।

(ग) जनाः समुद्रतटं .... आगच्छन्ति।

(घ) बालेभ्यः .... रोचते।

(ङ) भारतस्य पूर्वदिशायां .... अस्ति।

4. यथायोग्यं योजयत–

समुद्रतटः	ज्ञानाय
क्रीडनकम्	पोषणाय
दुग्धम्	प्रकाशाय
दीपकः	पर्यटनाय
विद्या	खेलनाय

5. तृतीयाविभक्तिप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत–

यथा– व्योमः मित्रेण सह गच्छति। (मित्र)

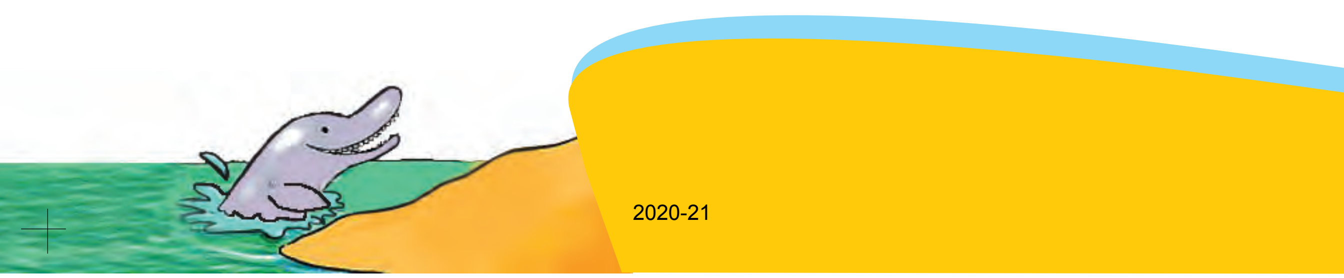
(क) बालकाः .... सह पठन्ति। (बालिका)

(ख) तडागः .... विभाति। (कमल)

(ग) अहमपि .... खेलामि। (कन्दुक)

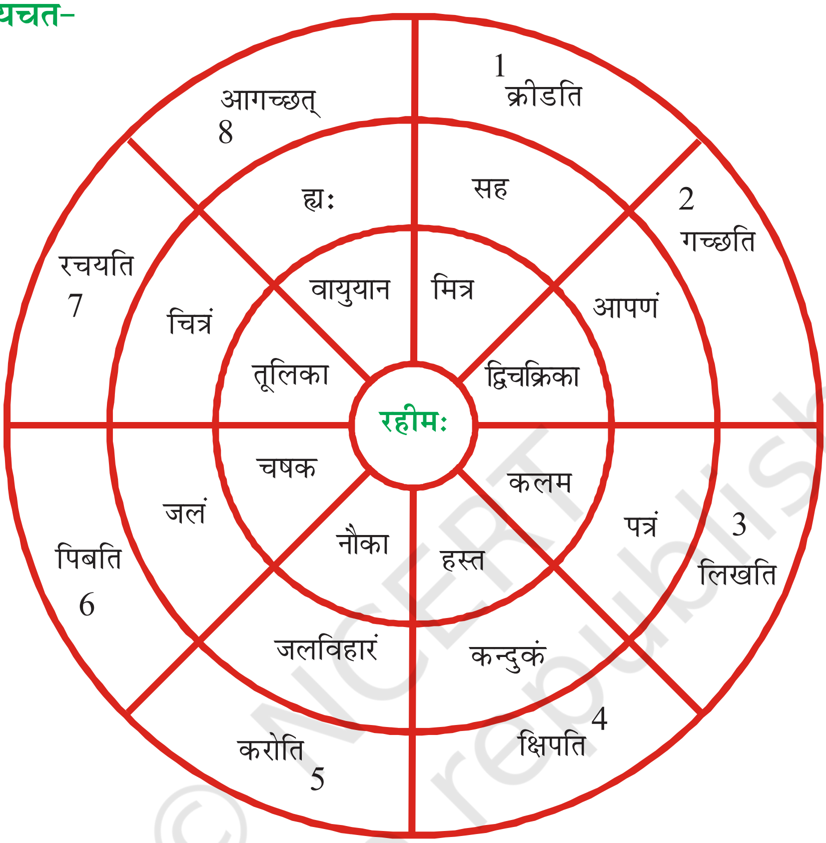
(घ) अश्वाः .... सह धावन्ति। (अश्व)

(ङ) मृगाः .... सह चरन्ति। (मृग)





6. **अधोलिखितं वृत्तचित्रं पश्यत। उदाहरणानुसारेण कोष्ठकगतैः शब्दैः उचितवाक्यानि रयचत–**



यथा–
1. रहीमः मित्रेण सह क्रीडति।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।
6. ....।
7. ....।
8. ....।

7. कोष्ठकात् उचितपदप्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) धनिकः .... धनं ददाति। (निर्धनम्/निर्धनाय)

(ख) बालः .... विद्यालयं गच्छति। (पठनाय/पठनेन)

(ग) सज्जनाः .... जीवन्ति। (परोपकारम्/परोपकाराय)

(घ) प्रधानाचार्यः .... पारितोषिकं यच्छति। (छात्राणाम्/छात्रेभ्यः)

(ङ) .... नमः। (शिक्षकाय/शिक्षकम्)

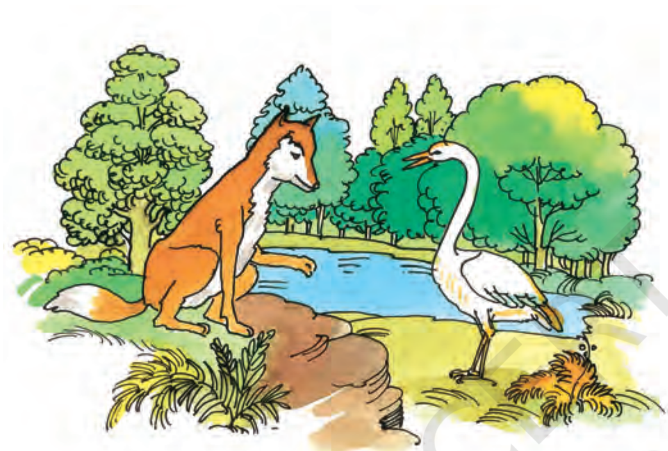


0649CH07

सप्तमः पाठः

बकस्य प्रतीकारः

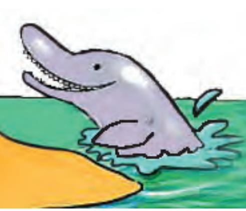
अव्ययप्रयोगः



एकस्मिन् वने शृगालः बकः च निवसतः स्म। तयोः मित्रता आसीत्। एकदा प्रातः शृगालः बकम् अवदत्– "मित्र! श्वः त्वं मया सह भोजनं कुरु।" शृगालस्य निमन्त्रणेन बकः प्रसन्नः अभवत्।



अग्रिमे दिने सः भोजनाय शृगालस्य निवासम् अगच्छत्। कुटिलस्वभावः शृगालः स्थाल्यां बकाय क्षीरोदनम् अयच्छत्। बकम् अवदत् च–"मित्र! अस्मिन् पात्रे आवाम् अधुना सहैव खादावः।" भोजनकाले बकस्य चञ्चुः स्थालीतः भोजनग्रहणे समर्था न अभवत्। अतः बकः केवलं क्षीरोदनम् अपश्यत्। शृगालः तु सर्वं क्षीरोदनम् अभक्षयत्।



शृगालेन वञ्चितः बकः अचिन्तयत्–"यथा अनेन मया सह व्यवहारः कृतः तथा अहम् अपि तेन सह व्यवहरिष्यामि"।

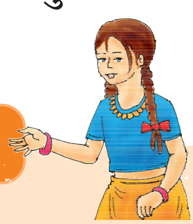


एवं चिन्तयित्वा सः शृगालम् अवदत्–"मित्र! त्वम् अपि श्वः सायं मया सह भोजनं करिष्यसि"। बकस्य निमन्त्रणेन शृगालः प्रसन्नः अभवत्। यदा शृगालः सायं बकस्य निवासं भोजनाय अगच्छत्, तदा बकः सङ्कीर्णमुखे कलशे क्षीरोदनम् अयच्छत्, शृगालं च अवदत्–"मित्र! आवाम् अस्मिन् पात्रे सहैव भोजनं कुर्वः"। बकः कलशात् चञ्च्वा क्षीरोदनम् अखादत्। परन्तु शृगालस्य मुखं कलशे न प्राविशत्। अतः बकः सर्वं क्षीरोदनम् अखादत्। शृगालः च केवलम् ईर्ष्यया अपश्यत्।

शृगालः बकं प्रति यादृशं व्यवहारम् अकरोत् बकः अपि शृगालं प्रति तादृशं व्यवहारं कृत्वा प्रतीकारम् अकरोत्।

उक्तमपि–

आत्मदुर्व्यवहारस्य फलं भवति दुःखदम्।
तस्मात् सद्व्यवहर्तव्यं मानवेन सुखैषिणा॥



शब्दार्थाः

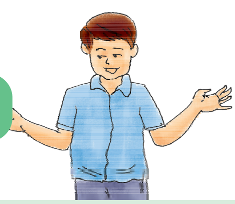
शृगालः	–	सियार	jackal
बकः	–	बगुला	Indian crane
आसीत्	–	था/थी	was
एकदा (अव्यय)	–	एक बार	once





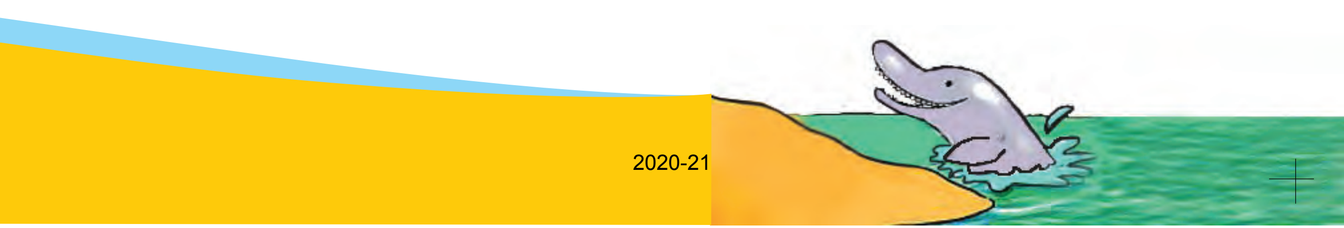
अवदत्	–	बोला	said/told
श्वः	–	(आने वाला) कल	tomorrow
कुरु	–	करो	do
स्थाल्याम्	–	थाली में	in the plate
अयच्छत्	–	दिया	gave
सङ्कीर्णमुखे	–	संकुचित मुख वाले/तंग मुख वाले में	in a narrow mouth
सहैव (सह+एव)	–	साथ ही	same time
चञ्चुः	–	चोंच	beak
स्थालीतः	–	थाली से	from plate
अपश्यत्	–	देखता था/देखती थी	saw
अभक्षयत्	–	खाया/खायी	ate
चिन्तयित्वा	–	सोचकर	after deep thought
प्रतीकारम्	–	बदला	revenge
सद्व्यवहर्तव्यम्	–	अच्छा व्यवहार करना चाहिए	one should act good
सुखैषिणा	–	सुख चाहने वाले के द्वारा	by pleasure seeker

अभ्यासः



1. उच्चारणं कुरुत–

यत्र	यदा	अपि	अहर्निशम्
तत्र	तदा	अद्य	अधुना
कुत्र	कदा	श्वः	एव
अत्र	एकदा	ह्यः	कुतः
अन्यत्र	च	प्रातः	सायम्



2. मञ्जूषातः उचितम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत-

अद्य	अपि	प्रातः	कदा	सर्वदा	अधुना

(क) .... भ्रमणं स्वास्थ्याय भवति।

(ख) .... सत्यं वद।

(ग) त्वं .... मातुलगृहं गमिष्यसि?

(घ) दिनेशः विद्यालयं गच्छति, अहम् .... तेन सह गच्छामि।

(ङ) .... विज्ञानस्य युगः अस्ति।

(च) .... रविवासरः अस्ति।

3. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत-

(क) शृगालस्य मित्रं कः आसीत्?

(ख) स्थालीतः कः भोजनं न अखादत्?

(ग) बकः शृगालाय भोजने किम् अयच्छत्?

(घ) शृगालस्य स्वभावः कीदृशः भवति?

4. पाठात् पदानि चित्वा अधोलिखितानां विलोमपदानि लिखत-

यथा- शत्रुः मित्रम्

सुखदम्	....	दुर्व्यवहारः	....
शत्रुता	....	सायम्	....
अप्रसन्नः	....	असमर्थः	....





5. मञ्जूषातः समुचितपदानि चित्वा कथां पूरयत–

मनोरथैः	पिपासितः	उपायम्	स्वल्पम्	पाषाणस्य	कार्याणि
उपरि	सन्तुष्टः	पातुम्	इतस्ततः	कुत्रापि	



एकदा एकः काकः .... आसीत्। सः जलं पातुम् .... अभ्रमत्। परं .... जलं न प्राप्नोत्। अन्ते सः एकं घटम् अपश्यत्। घटे .... जलम् आसीत्।



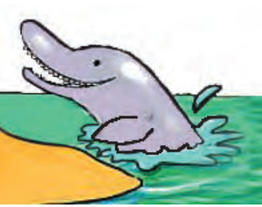
अतः सः जलम् .... असमर्थः अभवत्। सः एकम् .... अचिन्तयत्। सः .... खण्डानि घटे अक्षिपत्। एवं क्रमेण घटस्य जलम् .... आगच्छत्।



काकः जलं पीत्वा .... अभवत्। परिश्रमेण एव .... सिध्यन्ति न तु ....।

6. तत्समशब्दान् लिखत–

यथा–	सियार	शृगालः
	कौआ	....
	मक्खी	....
	बन्दर	....
	बगुला	....
	चोंच	....
	नाक	....



0649CH08

अष्टमः पाठः

सूक्तिस्तबकः

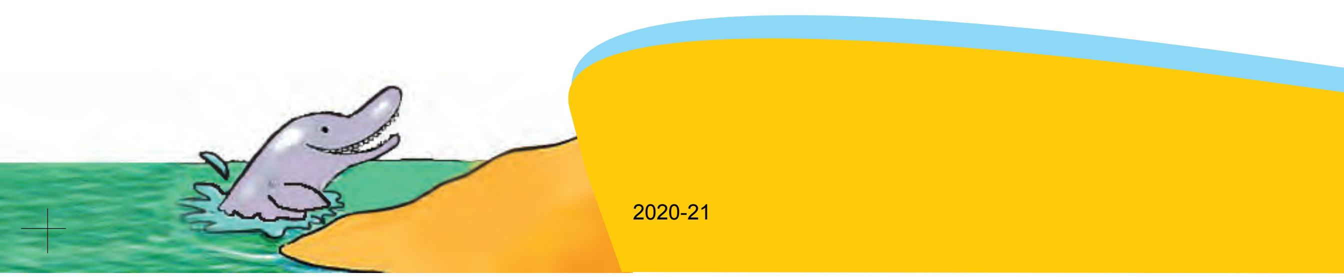
उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।1।।

पुस्तके पठितः पाठः जीवने नैव साधितः।
किं भवेत् तेन पाठेन जीवने यो न सार्थकः ।।2।।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।।3।।

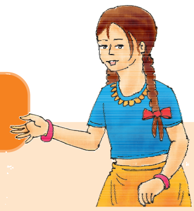
गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ।।4।।

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ।।5।।

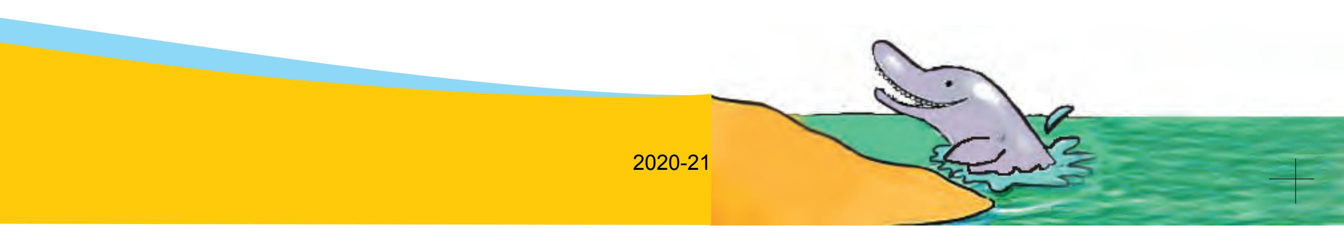




शब्दार्थाः

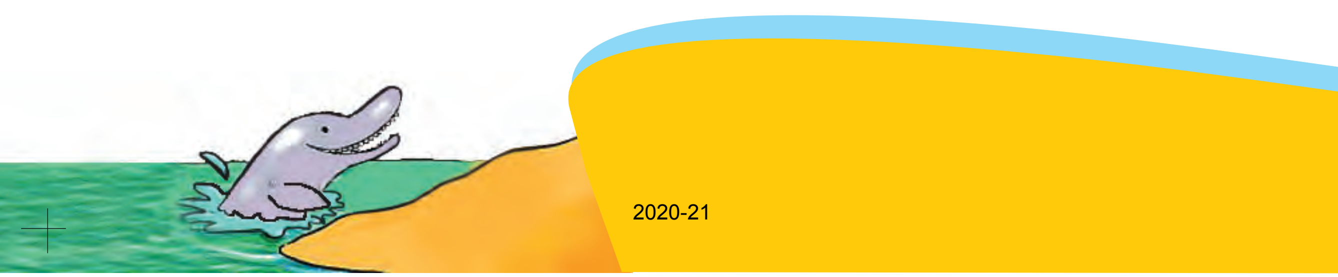


उद्यमेन	– परिश्रम से	by hard work
मनोरथैः	– मन की इच्छा से	desire/only by desiring
सिंहः	– शेर	lion
मृगाः	– हिरण/पशु	deers/animals
दरिद्रता	– दीनता/कृपणता	poverty
प्रियवाक्यप्रदानेन	– प्रिय वचन बोलने से	by using sweet words
तुष्यन्ति	– सन्तुष्ट/प्रसन्न होते हैं	get satisfied
मानवाः	– मनुष्य	human beings
तस्मात्	– इसलिये	therefore
वक्तव्यम्	– बोलना चाहिए	should be spoken
वचने	– बोलने में	in speaking
साधितः	– उपयोग किया	used
भवेत्	– होगा/होना चाहिए	should be



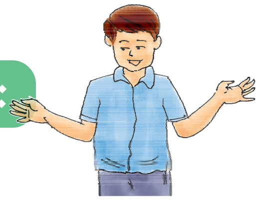


सार्थकः	–	अर्थपूर्ण/प्रयोजन युक्त	meaningful
काकः	–	कौआ	crow
कृष्णः	–	काला	black
पिकः	–	कोयल	cuckoo
पिककाकयोः	–	कोयल और कौए में	between cuckoo and crow
प्राप्ते	–	आने पर	after getting
गच्छन्	–	जाता हुआ	while going
पिपीलकः	–	नर चींटी	ant (he)
याति	–	जाता है	goes
योजनानाम्	–	4 कोसों का (लगभग 12 कि.मी.)	a measure of distance equal to 12 kms.
शतानि	–	सौ	hundreds
अगच्छन्	–	न चलते हुए	without movement
वैनतेयः	–	गरुड़	garuda





अभ्यासः



1. सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत।

2. श्लोकांशान् योजयत–

क	ख
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं	सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
गच्छन् पिपीलको याति	जीवने यो न सार्थकः।
प्रियवाक्यप्रदानेन	को भेदः पिककाकयोः।
किं भवेत् तेन पाठेन	योजनानां शतान्यपि।
काकः कृष्णः पिकः कृष्णः	वचने का दरिद्रता।

3. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

(क) सर्वे जन्तवः केन तुष्यन्ति?

(ख) पिककाकयोः भेदः कदा भवति?

(ग) कः गच्छन् योजनानां शतान्यपि याति?

(घ) अस्माभिः किं वक्तव्यम्?

4. उचितकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुचितकथनानां समक्षं–'न' इति लिखत–

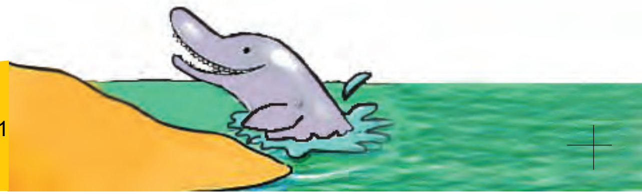
(क) काकः कृष्णः न भवति। ☐

(ख) अस्माभिः प्रियं वक्तव्यम्। ☐

(ग) वसन्तसमये पिककाकयोः भेदः भवति। ☐

(घ) वैनतेयः पशुः अस्ति। ☐

(ङ) वचने दरिद्रता न कर्त्तव्या। ☐



5. मञ्जूषातः समानार्थकानि पदानि चित्वा लिखत-

ग्रन्थे	कोकिलः	गरुडः	परिश्रमेण	कथने

वचने ....

वैनतेयः ....

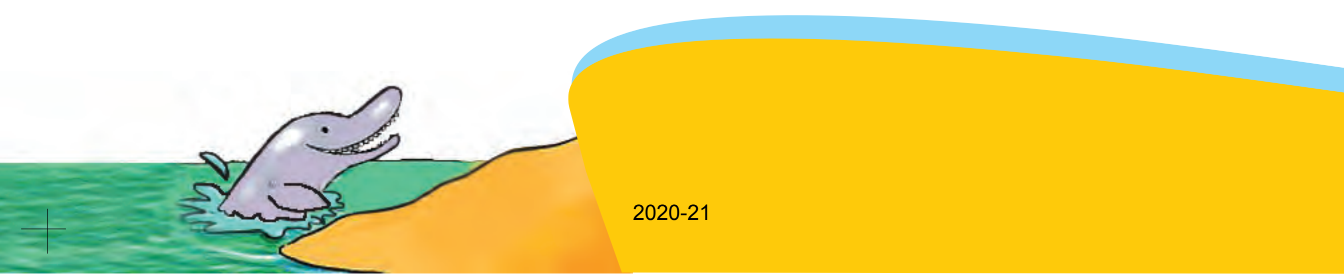
पुस्तके ....

उद्यमेन ....

पिकः ....

6. विलोमपदानि योजयत-

क	ख
सार्थकः	आगच्छति
कृष्णः	श्वेतः
अनुक्तम्	सुप्तस्य
गच्छति	उक्तम्
जागृतस्य	निरर्थकः



0649CH09

नवमः पाठः

क्रीडास्पर्धा

हुमा – यूयं कुत्र गच्छथ?

इन्दरः – वयं विद्यालयं गच्छामः।



फेकनः – तत्र क्रीडास्पर्धाः सन्ति। वयं खेलिष्यामः।

रामचरणः – किं स्पर्धाः केवलं बालकेभ्यः एव सन्ति?

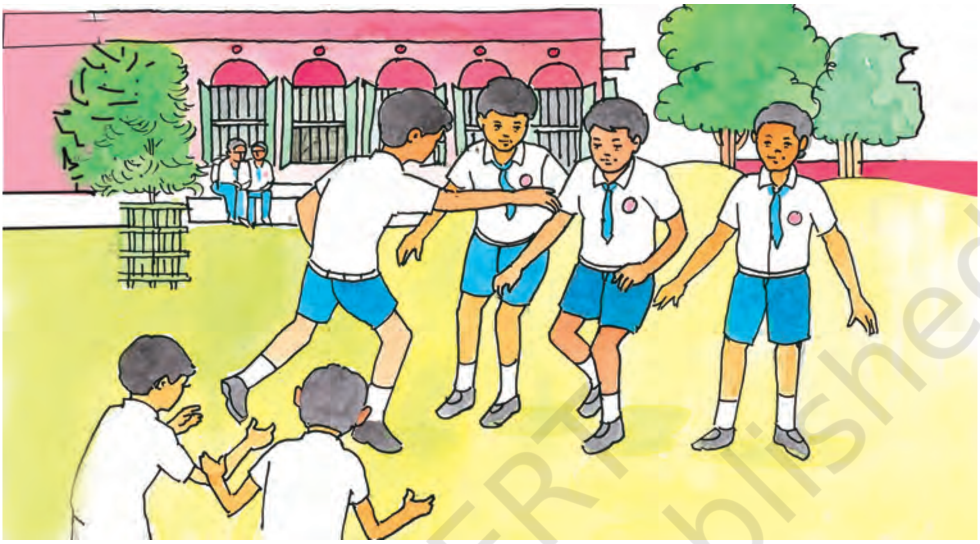
प्रसन्ना – नहि, बालिकाः अपि खेलिष्यन्ति।

रामचरणः – किं यूयं सर्वे एकस्मिन् दले स्थ? अथवा पृथक्-पृथक् दले?

प्रसन्ना – तत्र बालिकाः बालकाः च मिलित्वा खेलिष्यन्ति।

फेकनः – आम्, बैडमिंटन-क्रीडायां मम सहभागिनी जूली अस्ति।

प्रसन्ना – एतद् अतिरिक्तं कबड्डी, नियुद्धं, क्रिकेटं, पादकन्दुकं, हस्तकन्दुकं, चतुरङ्गः इत्यादयः स्पर्धाः भविष्यन्ति।



इन्दरः – हुमे! किं त्वं न क्रीडसि? तव भगिनी तु मम पक्षे क्रीडति।

हुमा – नहि, मह्यं चलचित्रं रोचते। परम् अत्र अहं दर्शकरूपेण स्थास्यामि।

फेकनः – अहो! पूरनः कुत्र अस्ति? किं सः कस्यामपि स्पर्धायां प्रतिभागी नास्ति?

रामचरणः – सः द्रष्टुं न शक्नोति। तस्मै अस्माकं विद्यालये पठनाय तु विशेषव्यवस्था वर्तते। परं क्रीडायै प्रबन्धः नास्ति।

हुमा – अयं कथमपि न न्यायसङ्गतः। पूरनः सक्षमः, परं प्रबन्धस्य अभावात् क्रीडितुं न शक्नोति।

इन्दरः – अस्माकं तादृशानि अनेकानि मित्राणि सन्ति। वस्तुतः तानि अन्यथासमर्थानि।

फेकनः – अतः वयं सर्वे प्राचार्यं मिलामः। तं कथयामः। शीघ्रमेव तेषां कृते व्यवस्था भविष्यति।

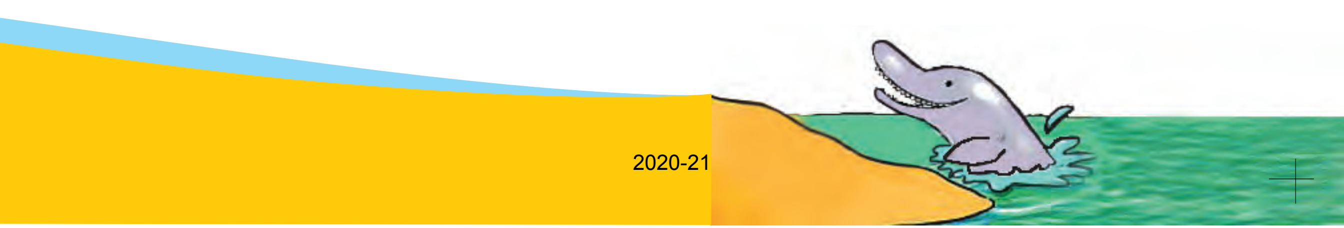




शब्दार्थाः

स्पर्धाः	–	प्रतियोगिताएँ	competitions
यूयम्	–	तुम सब	you all
वयम्	–	हम सब	we all
खेलिष्यामः	–	खेलेंगे	shall play
मिलित्वा	–	मिलकर	together
नियुद्धम्	–	जूडो	judo
पादकन्दुकम्	–	फुटबाल	football
हस्तकन्दुकम्	–	वॉलीबाल	volleyball
चतुरङ्गः	–	चेस	chess
चलचित्रम्	–	सिनेमा	cinema
स्थास्यामि	–	रहूँगी/रहूँगा	shall stay
द्रष्टुम्	–	देखने के लिए	to see
न्यायसङ्गतः	–	उचित	lawful, proper
तादृशानि	–	वैसे	similar
अन्यथासमर्थानि	–	भिन्न तरीके से योग्य	differently able

अन्यथासमर्थः–यह शब्द वस्तुतः अंग्रेज़ी के differently able का बोधक है। जो प्रायशः विकलांग के लिये प्रयोग में लाया जा रहा है।





अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत-

अहम्	आवाम्	वयम्
माम्	आवाम्	अस्मान्
मम	आवयोः	अस्माकम्
त्वम्	युवाम्	यूयम्
त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तव	युवयोः	युष्माकम्

2. निर्देशानुसारं परिवर्तनं कुरुत-

यथा- अहं क्रीडामि। - (बहुवचने) - **वयं क्रीडामः।**

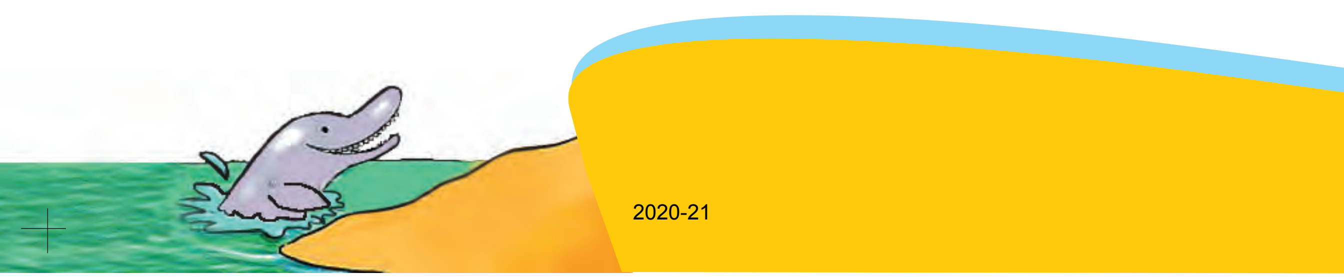
(क) अहं नृत्यामि। - (बहुवचने) - ....

(ख) त्वं पठसि। - (बहुवचने) - ....

(ग) युवां गच्छथः। - (एकवचने) - ....

(घ) अस्माकं पुस्तकानि। - (एकवचने) - ....

(ङ) तव गृहम्। - (द्विवचने) - ....





3. कोष्ठकात् उचितं शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) .... पठामि। (वयम्/अहम्)

(ख) .... गच्छथः। (युवाम्/यूयम्)

(ग) एतत् .... पुस्तकम्। (माम्/मम)

(घ) .... क्रीडनकानि। (युष्मान्/युष्माकम्)

(ङ) .... छात्रे स्वः। (वयम्/आवाम्)

4. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य सार्थकानि वाक्यानि रचयत–

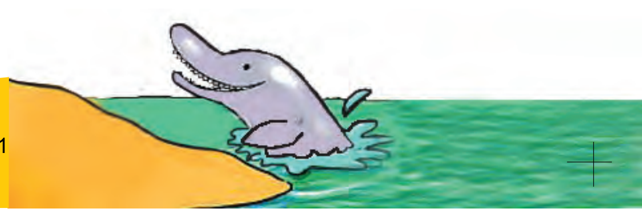
यूयम्	लेखं	पश्यामि
वयम्	शिक्षिकां	रचयामः
युवाम्	दूरदर्शनं	कथयिष्यथः
अहम्	कथां	पठिष्यावः
त्वम्	पुस्तकं	लेखिष्यसि
आवाम्	चित्राणि	नंस्यथ

5. उचितपदैः वाक्यनिर्माणं कुरुत–

मम	तव	आवयोः	युवयोः	अस्माकम्	युष्माकम्

यथा– एषा **मम** पुस्तिका।

(क) एतत् .... पुस्तकम्।



(ख) .... बुद्धिस्थिरा।

(ग) एषः .... देवालयः।

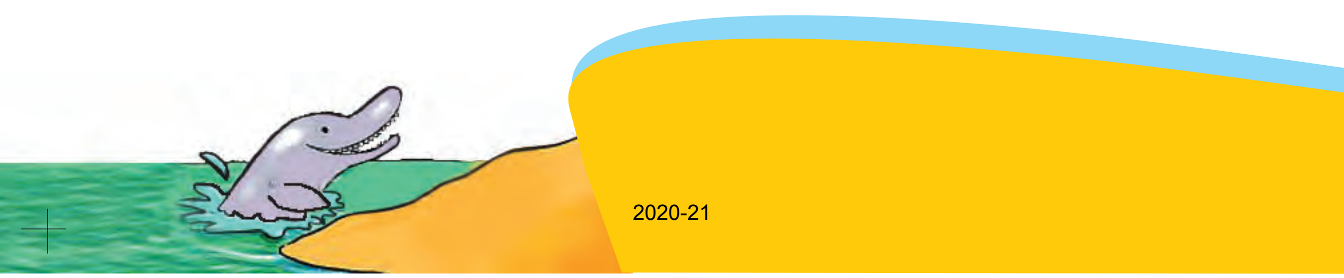
(घ) एषा .... शिक्षिका।

(ङ) संस्कृतम् .... भाषा।

(च) एतानि .... चित्राणि।

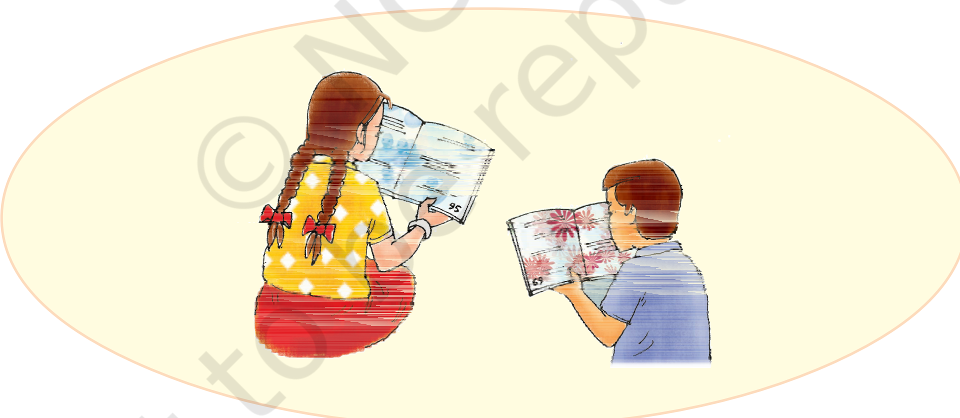
6. वाक्यानि रचयत-

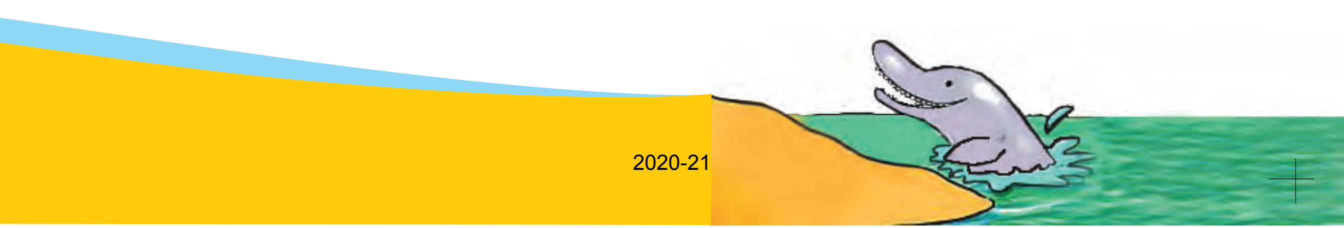
	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
(क)	त्वं लेखं लेखिष्यसि।	......................................।	..........................।
(ख)	..............................।	आवाम् वस्त्रे धारयिष्यावः।	..........................।
(ग)	अहं पुस्तकं पठिष्यामि।	......................................।	..........................।
(घ)	..............................।	ते फले खादिष्यथः।	..........................।
(ङ)	मम गृहं सुन्दरम्।	......................................।	..........................।
(च)	..............................।	......................................।	यूयं गमिष्यथ।



7. एकवचनपदस्य बहुवचनपदं, बहुवचनपदस्य एकवचनपदं च लिखत–

यथा–	एषः	एते
	सः	....
	ताः	....
	त्वम्	....
	एताः	....
	तव	....
	अस्माकम्	....
	तानि	....





0649CH10

दशमः पाठः

कृषिकाः कर्मवीराः

सूर्यस्तपतु मेघाः वा वर्षन्तु विपुलं जलम्।
कृषिका कृषिको नित्यं शीतकालेऽपि कर्मठौ ।।1।।

ग्रीष्मे शरीरं सस्वेदं शीते कम्पमयं सदा।
हलेन च कुदालेन तौ तु क्षेत्राणि कर्षतः ।।2।।

पादयोर्न पदत्राणे शरीरे वसनानि नो।
निर्धनं जीवनं कष्टं सुखं दूरे हि तिष्ठति ।।3।।

गृहं जीर्णं न वर्षासु वृष्टिं वारयितुं क्षमम्।
तथापि कर्मवीरत्वं कृषिकाणां न नश्यति ।।4।।

तयोः श्रमेण क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि सर्वदा।
धरित्री सरसा जाता या शुष्का कण्टकावृता ।।5।।

शाकमन्नं फलं दुग्धं दत्त्वा सर्वेभ्य एव तौ।
क्षुधा-तृषाकुलौ नित्यं विचित्रौ जन-पालकौ ।।6।।





शब्दार्थाः

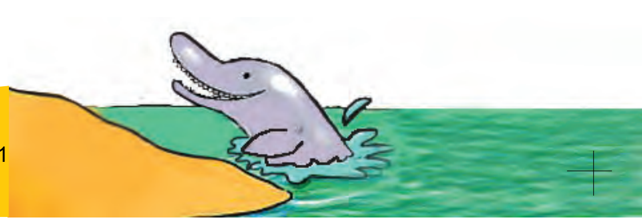
तपतु	–	तपाये, जलाये	may burn
विपुलम्	–	अत्यधिक	in large amount
कर्मठौ	–	निरन्तर क्रियाशील	active
सस्वेदम्	–	पसीने से युक्त	full of sweat
पदत्राणे	–	जूते	shoes
वसनानि	–	कपड़े	clothes
जीर्णम्	–	पुराना	old
वारयितुम्	–	दूर करने में	in removing
क्षमम्	–	समर्थ	able
सस्यपूर्णानि	–	फसल से युक्त	full of crops
धरित्री	–	पृथ्वी	earth
कण्टकावृता	–	काँटों से परिपूर्ण	full of thorns
क्षुधातृषाकुलौ	–	भूख प्यास से बेचैन	distressed with hunger and thirst



अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत–

सूर्यस्तपतु	जीर्णम्	शीतकालेऽपि
वारयितुम्	ग्रीष्मे	सस्यपूर्णानि
पदत्राणे	कण्टकावृता	क्षुधा-तृषाकुलौ



2. श्लोकांशान् योजयत-

क	ख
गृहं जीर्णं न वर्षासु	तौ तु क्षेत्राणि कर्षतः।
हलेन च कुदालेन	या शुष्का कण्टकावृता।
पादयोर्न पदत्राणे	सस्यपूर्णानि सर्वदा।
तयोः श्रमेण क्षेत्राणि	शरीरे वसनानि नो।
धरित्री सरसा जाता	वृष्टिं वारयितुं क्षमम्।

3. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

यथा- कृषकाः शीतकालेऽपि कर्मठाः भवन्ति। [आम्]

कृषकाः हलेन क्षेत्राणि न कर्षन्ति। [न]

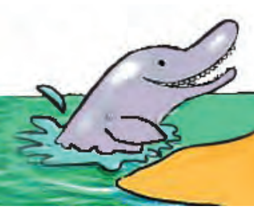
(क) कृषकाः सर्वेभ्यः अन्नं यच्छन्ति। [ ]

(ख) कृषकाणां जीवनं कष्टप्रदं न भवति। [ ]

(ग) कृषकः क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि करोति। [ ]

(घ) शीते शरीरे कम्पनं न भवति। [ ]

(ङ) श्रमेण धरित्री सरसा भवति। [ ]





4. मञ्जूषातः पर्यायवाचिपदानि चित्वा लिखत-

रविः	वस्त्राणि	जर्जरम्	अधिकम्	पृथ्वी	पिपासा

वसनानि ....

सूर्यः ....

तृषा ....

विपुलम् ....

जीर्णम् ....

धरित्री ....

5. मञ्जूषातः विलोमपदानि चित्वा लिखत-

धनिकम्	नीरसा	अक्षमम्	दुःखम्	शीते	पार्श्वे

सुखम् ....

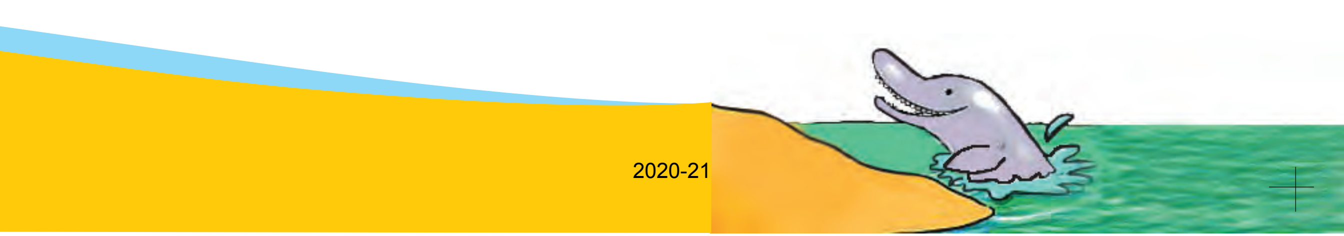
दूरे ....

निर्धनम् ....

क्षमम् ....

ग्रीष्मे ....

सरसा ....



6. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

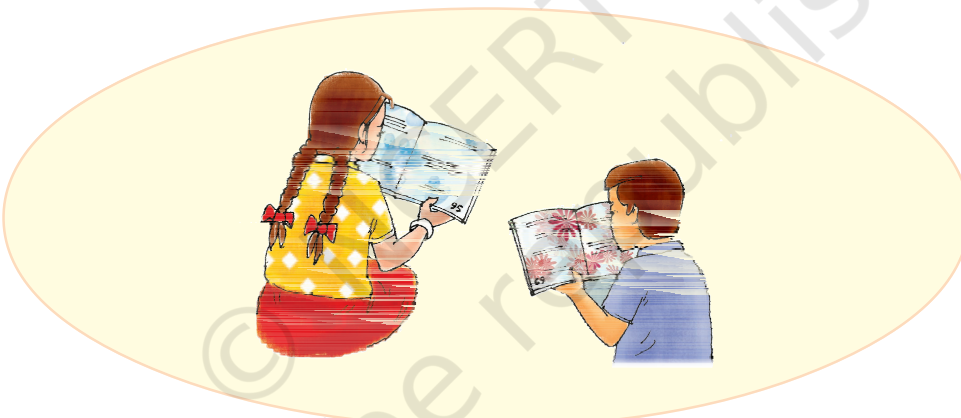
(क) कृषकाः केन क्षेत्राणि कर्षन्ति?

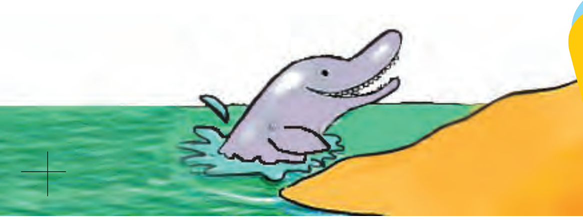
(ख) केषां कर्मवीरत्वं न नश्यति?

(ग) श्रमेण का सरसा भवति?

(घ) कृषकाः सर्वेभ्यः किं किं यच्छन्ति?

(ङ) कृषकात् दूरे किं तिष्ठति?





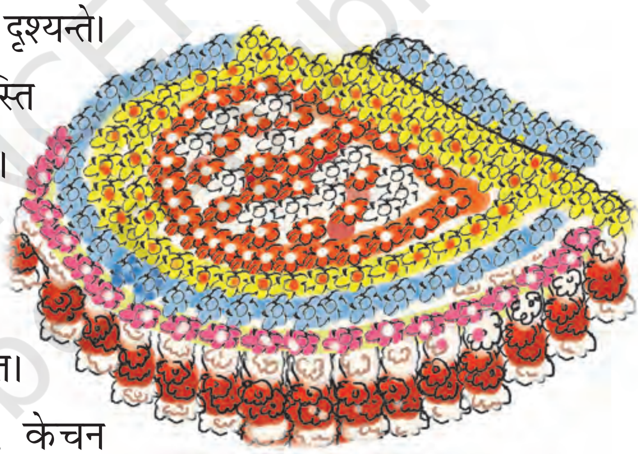
0649CH11

एकादशः पाठः

पुष्पोत्सवः

उत्सवप्रियः भारतदेशः। अत्र कुत्रचित् शस्योत्सवः भवति, कुत्रचित् पशूत्सवः भवति, कुत्रचित् धार्मिकोत्सवः भवति कुत्रचित् च यानोत्सवः। एतेषु एव अस्ति अन्यतमः पुष्पोत्सवः इति। अयं 'फूलवालों की सैर' इति नाम्ना प्रसिद्धः अस्ति।

देहल्याः मेहरौलीक्षेत्रे ऑक्टोबर्मासे अस्य आयोजनं भवति। अस्मिन् अवसरे तत्र बहुविधानि पुष्पाणि दृश्यन्ते।

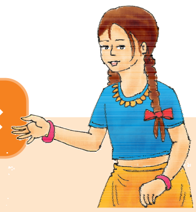


परं प्रमुखम् आकर्षणं तु अस्ति पुष्पनिर्मितानि व्यजनानि। जनाः एतानि पुष्पव्यजनानि योगमायामन्दिरे बख्तियारकाकी इत्यस्य समाधिस्थले च अर्पयन्ति। केचन पाटलपुष्पैः निर्मितानि, केचन कर्णिकारपुष्पैः, अन्ये जपाकुसुमैः, अपरे मल्लिकापुष्पैः, इतरे च गेन्दापुष्पैः निर्मितानि व्यजनानि नयन्ति।

अयम् उत्सवः दिवसत्रयं यावत् प्रचलति। एतेषु दिवसेषु पतङ्गानाम् उड्डयनम्, विविधाः क्रीडाः मल्लयुद्धं चापि प्रचलति।

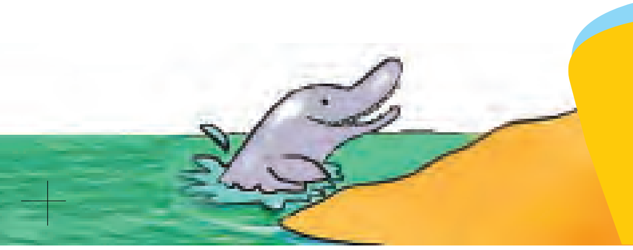


विगतेभ्यः द्विशतवर्षेभ्यः पुष्पोत्सवः जनान् आनन्दयति। मध्ये इयं परम्परा स्थगिता आसीत्। परं स्वतन्त्रताप्राप्तेः पश्चात् इयं मनोहारिणी परम्परा पुनः समारब्धा। पुष्पोत्सवः अद्यापि सोल्लासं सोत्साहं च प्रचलति।



शब्दार्थाः

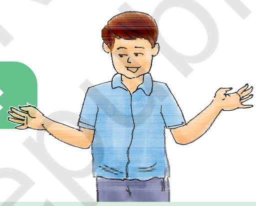
उत्सवप्रियः	-	उत्सवों का प्रेमी	lover of festivals
कुत्रचित्	-	कहीं पर	somewhere
शस्योत्सवः	-	फसलों का उत्सव	festival of crops
पशूत्सवः (पशु+उत्सवः)	-	पशुओं का उत्सव	festival of animals
यानोत्सवः	-	गाड़ियों का उत्सव	festival of vehicles
अन्यतमः	-	कई में से एक	one of many
पुष्पोत्सवः	-	फूलों का उत्सव	festival of flowers
इति नाम्ना	-	इस नाम से	by this name
अवसरे	-	अवसर पर	on this occasion
पुष्पनिर्मितानि	-	फूलों से बने हुए	made of flowers
व्यजनानि	-	पंखे	fans
पुष्पव्यजनानि	-	फूलों के पंखे	fans of flowers
समाधिस्थले	-	दरगाह	on the burial place
अर्पयन्ति	-	अर्पित करते हैं	offer
पाटलपुष्पैः	-	गुलाब के फूलों से	with rose flowers





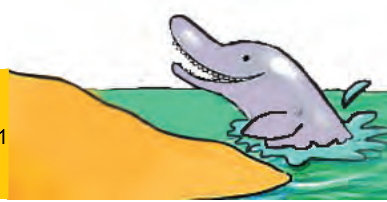
कर्णिकारपुष्पैः	–	कनेर के फूलों से	with oleander flowers
जपापुष्पैः	–	जवाकुसुम के फूलों से/ गुड़हल के फूलों से	with chinese rose
मल्लिकापुष्पैः	–	चमेली के फूलों से	with jasmine flowers
नयन्ति	–	ले जाते हैं	take, bring
यावत्	–	तक	upto
प्रचलति	–	चलता है	continue
पतङ्गानाम्	–	पतंगों का	of kites
उड्डयनम्	–	उड़ाना	flying
मल्लयुद्धम्	–	कुश्ती	wrestling

अभ्यासः



1. वचनानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत–

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा–	मन्दिरे	मन्दिरयोः	मन्दिरेषु
	अवसरे	....	....
	....	स्थलयोः	....
	....	....	दिवसेषु
	क्षेत्रे	....	....
	....	व्यजनयोः	....
	....	....	पुष्पेषु





2. कोष्ठकेषु प्रदत्तशब्देषु समुचितपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) .... बहवः उत्सवाः भवन्ति। (भारतम्/भारते)

(ख) .... मीनाः वसन्ति। (सरोवरे/सरोवरात्)

(ग) जनाः .... पुष्पाणि अर्पयन्ति। (मन्दिरेण/मन्दिरे)

(घ) खगाः .... निवसन्ति। (नीडानि/नीडेषु)

(ङ) छात्राः .... प्रयोगं कुर्वन्ति। (प्रयोगशालायाम्/प्रयोगशालायाः)

(च) .... पुष्पाणि विकसन्ति। (उद्यानस्य/उद्याने)

3. अधोलिखितानि पदानि आधृत्य सार्थकानि वाक्यानि रचयत-

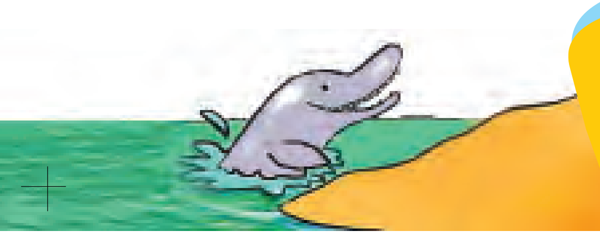
वानराः	वनेषु	तरन्ति
सिंहाः	वृक्षेषु	नृत्यन्ति
मयूराः	जले	उत्पतन्ति
मत्स्याः	आकाशे	गर्जन्ति
खगाः	उद्याने	कूर्दन्ति

4. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) जनाः पुष्पव्यजनानि कुत्र अर्पयन्ति?

(ख) पुष्पोत्सवस्य आयोजनं कदा भवति?

(ग) अस्माकं भारतदेशः कीदृशः अस्ति?





(घ) पुष्पोत्सवः केन नाम्ना प्रसिद्धः अस्ति?

(ङ) मेहरौलीक्षेत्रे कस्याः मन्दिरं कस्य समाधिस्थलञ्च अस्ति?

5. कोष्ठकेषु दत्तेषु शब्देषु उचितां विभक्तिं प्रयुज्य वाक्यानि पूरयत–

यथा – **सरोवरे** मीनाः सन्ति। (सरोवर)

(क) .... कच्छपाः भ्रमन्ति। (तडाग)

(ख) .... सैनिकाः सन्ति। (शिविर)

(ग) यानानि .... चलन्ति।(राजमार्ग)

(घ) .... रत्नानि सन्ति। (धरा)

(ङ) बालाः .... क्रीडन्ति। (क्रीडाक्षेत्र)

6. मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

पुष्पेषु	गङ्गायाम्	विद्यालये	वृक्षयोः	उद्यानेषु

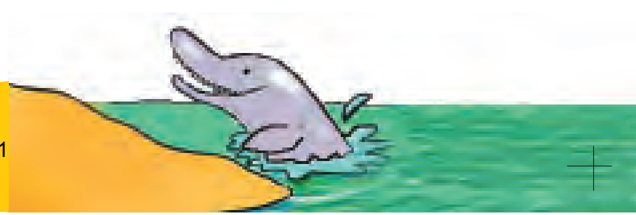
(क) वयं .... पठामः।

(ख) जनाः .... भ्रमन्ति।

(ग) .... नौकाः सन्ति।

(घ) .... भ्रमराः गुञ्जन्ति।

(ङ) .... फलानि पक्वानि सन्ति।

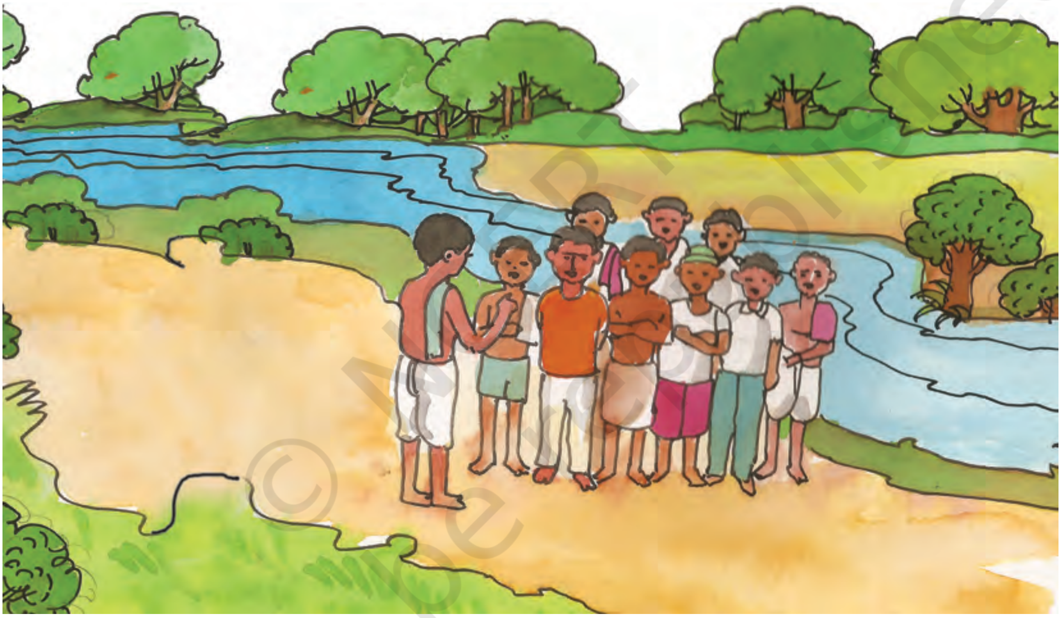


0649CH12

द्वादशः पाठः

दशमः त्वम् असि

एकदा दश बालकाः स्नानाय नदीम् अगच्छन्। ते नदीजले चिरं स्नानम् अकुर्वन्। ततः ते तीर्त्वा पारं गताः। तदा तेषां नायकः अपृच्छत्–अपि सर्वे बालकाः नदीम् उत्तीर्णाः?



तदा कश्चित् बालकः अगणयत्–एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्टौ, नव इति। सः स्वं न अगणयत्। अतः सः अवदत्–नव एव सन्ति। दशमः न अस्ति। अपरः अपि बालकः पुनः अन्यान् बालकान् अगणयत्। तदा अपि नव एव आसन्। अतः ते निश्चयम् अकुर्वन् यत् दशमः नद्यां मग्नः। ते दुःखिताः तूष्णीम् अतिष्ठन्।





तदा कश्चित् पथिकः तत्र आगच्छत्। सः तान् बालकान् दुःखितान् दृष्ट्वा अपृच्छत्–बालकाः! युष्माकं दुःखस्य कारणं किम्? बालकानां नायकः अकथयत्–'वयं दश बालकाः स्नातुम् आगताः। इदानीं नव एव स्मः। एकः नद्यां मग्नः' इति।

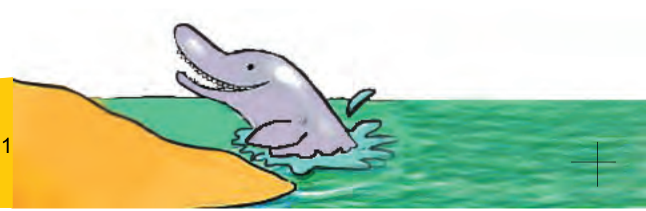
पथिकः तान् अगणयत्। तत्र दश बालकाः एव आसन्। सः नायकम् आदिशत् त्वं बालकान् गणय। सः तु नव बालकान् एव अगणयत्। तदा पथिकः अवदत्–दशमः त्वम् असि इति।

तत् श्रुत्वा प्रहृष्टाः भूत्वा सर्वे गृहम् अगच्छन्।



शब्दार्थाः

इदानीम्	–	अब	now
एकदा	–	एक बार	once
स्नानाय	–	नहाने के लिए	for bathing
निर्मलम्	–	साफ	clean
शीतलम्	–	ठण्डा	cold
तीर्त्वा	–	तैरकर	after swimming
नायकः	–	नेता	leader
चिरम्	–	देर तक	for a long time
उत्तीर्णाः	–	पार कर लिया	crossed over





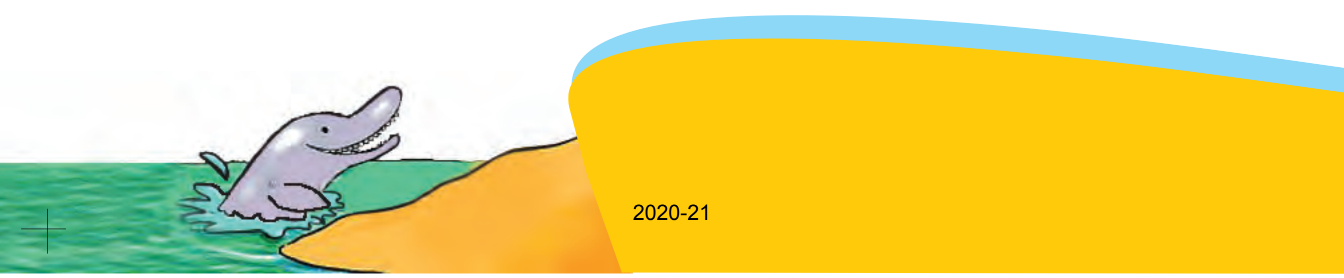
तदा	–	तब	then
अगणयत्	–	गिना	counted
स्नात्वा	–	नहाकर	after bathing
अपरः	–	दूसरा	another
पुनः	–	फिर, दोबारा	again
आसन्	–	थे/थीं	were
नद्याम्	–	नदी में	in the river
तूष्णीम्	–	मौन	silent
पथिकः	–	राहगीर	traveller
स्नातुम्	–	स्नान के लिए	to take bath
मग्नः	–	डूब गया	sank
प्रहृष्टाः	–	आनन्दित/प्रसन्न	happy
श्रुत्वा	–	सुनकर	after listening
इति	–	उद्धरण की समाप्ति का सूचक अव्यय	to end a sentence/ context



अभ्यासः

1. उच्चारणं कुरुत–

पुँल्लिङ्गे	स्त्रीलिङ्गे	नपुंसकलिङ्गे
एकः	एका	एकम्
द्वौ	द्वे	द्वे
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि





पञ्च	पञ्च	पञ्च
षट्	षट्	षट्
सप्त	सप्त	सप्त
अष्ट	अष्ट	अष्ट
नव	नव	नव
दश	दश	दश

2. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

(क) कति बालकाः स्नानाय अगच्छन्?

(ख) ते स्नानाय कुत्र अगच्छन्?

(ग) ते कं निश्चयम् अकुर्वन्?

(घ) मार्गे कः आगच्छत्?

(ङ) पथिकः किम् अवदत्?

3. शुद्धकथनानां समक्षम् (✓) इति अशुद्धकथनानां समक्षं (×) कुरुत–

(क) दशबालकाः स्नानाय अगच्छन्। ☐

(ख) सर्वे वाटिकायाम् अभ्रमन्। ☐

(ग) ते वस्तुतः नव बालकाः एव आसन्। ☐

(घ) बालकः स्वं न अगणयत्। ☐

(ङ) एकः बालकः नद्यां मग्नः। ☐

(च) ते सुखिताः तूष्णीम् अतिष्ठन्। ☐

(छ) कोऽपि पथिकः न आगच्छत्। ☐



(ज) नायकः अवदत्- दशमः त्वम् असि इति। ☐

(झ) ते सर्वे प्रहृष्टाः भूत्वा गृहम् अगच्छन्। ☐

4. मञ्जूषातः शब्दान् चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

गणयित्वा	श्रुत्वा	दृष्ट्वा	कृत्वा	गृहीत्वा	तीर्त्वा

(क) ते बालकाः .... नद्याः उत्तीर्णाः।

(ख) पथिकः बालकान् दुःखितान् .... अपृच्छत्।

(ग) पुस्तकानि .... विद्यालयं गच्छ।

(घ) पथिकस्य वचनं .... सर्वे प्रमुदिताः गृहम् अगच्छन्।

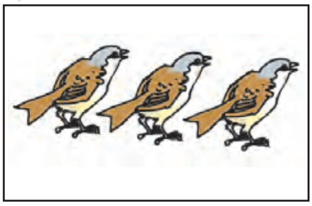
(ङ) पथिकः बालकान् .... अकथयत् दशमः त्वम् असि।

(च) मोहनः कार्यं .... गृहं गच्छति।

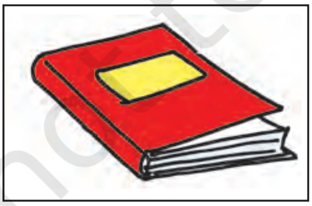
5. चित्राणि दृष्ट्वा संख्यां लिखत-



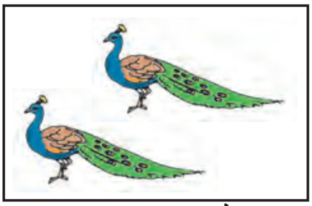
.... कन्दुकानि।



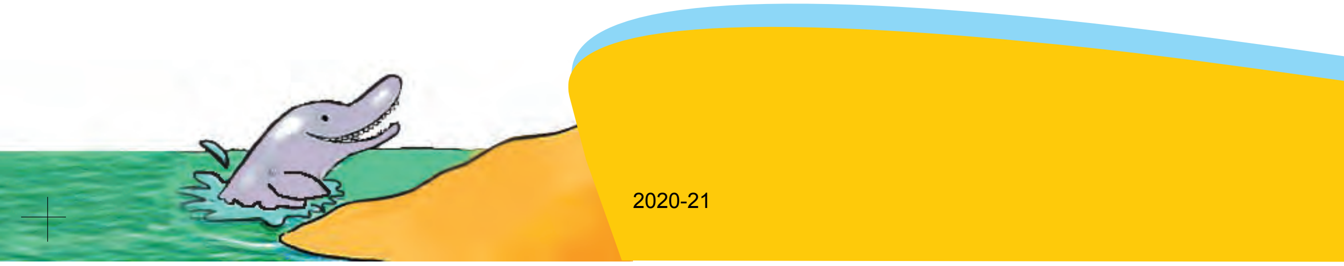
.... चटकाः।



.... पुस्तकम्।

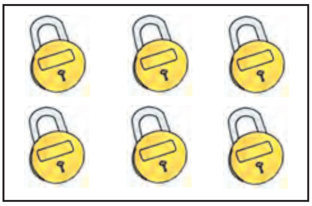


.... मयूरौ।

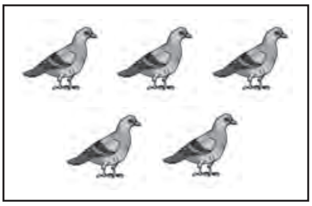




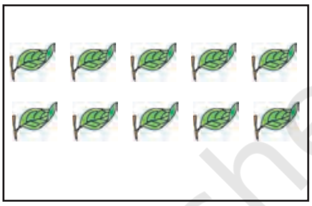
············ बालिके।



············ तालाः।



············ कपोताः।



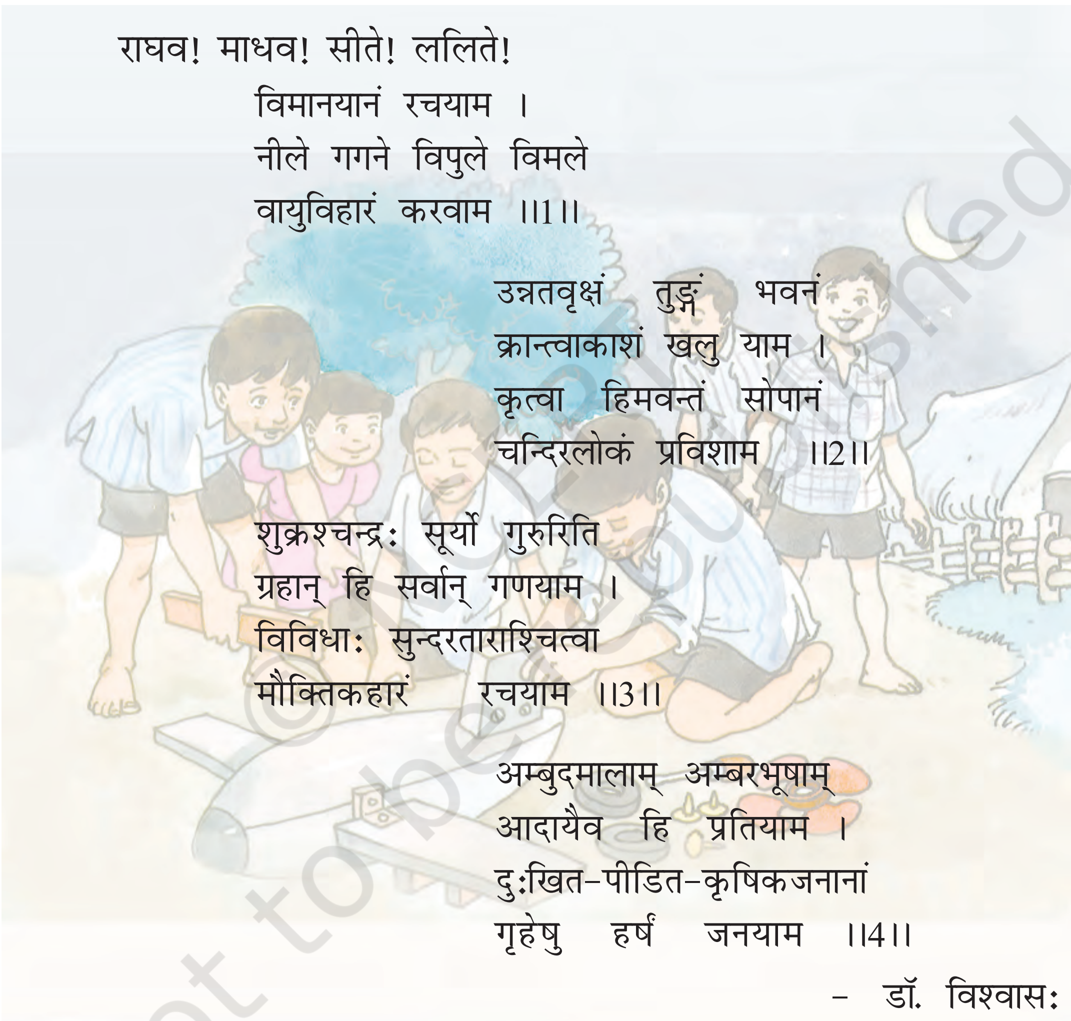
············ पत्राणि।



0649CH13

त्रयोदशः पाठः

विमानयानं रचयाम



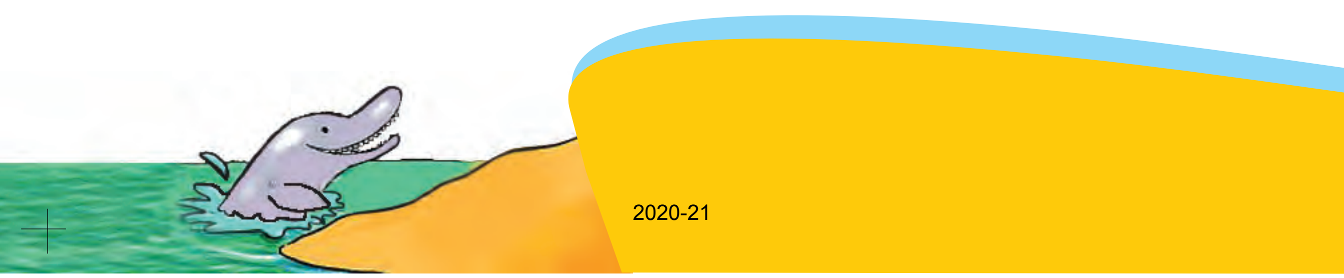
राघव! माधव! सीते! ललिते!
विमानयानं रचयाम ।
नीले गगने विपुले विमले
वायुविहारं करवाम ।।1।।

उन्नतवृक्षं तुङ्गं भवनं
क्रान्त्वाकाशं खलु याम ।
कृत्वा हिमवन्तं सोपानं
चन्दिरलोकं प्रविशाम ।।2।।

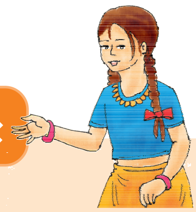
शुक्रश्चन्द्रः सूर्यो गुरुरिति
ग्रहान् हि सर्वान् गणयाम ।
विविधाः सुन्दरताराश्चित्वा
मौक्तिकहारं रचयाम ।।3।।

अम्बुदमालाम् अम्बरभूषाम्
आदायैव हि प्रतियाम ।
दुःखित-पीडित-कृषिकजनानां
गृहेषु हर्षं जनयाम ।।4।।

– डॉ. विश्वासः

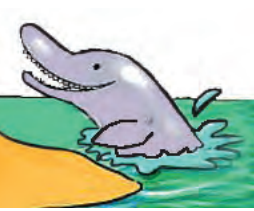






शब्दार्थाः

विमानयानम्	–	हवाई जहाज	aeroplane
रचयाम	–	(हम) बनाएँ	should make
विपुले	–	विस्तृत (आकाश) में	expansive
विमले	–	निर्मल (आकाश) में	clear
वायुविहारम्	–	वायुयात्रा (आकाश में यात्रा)	flying in the sky
करवाम	–	(हम) करें	should do
उन्नतवृक्षम्	–	ऊँचे वृक्ष को	high tree
तुङ्गम्	–	ऊँचा	high
क्रान्त्वा	–	पार करके	crossing over
याम	–	(हम) चलें	should go
हिमवन्तं सोपानम्	–	बर्फ की सीढ़ी को	ice-ladder
चन्दिरलोकम्	–	चन्द्रलोक को	moonland
प्रविशाम	–	(हम) प्रवेश करें	should enter
गणयाम	–	(हम) गिनें	should count
चित्वा	–	चुनकर	picking up
मौक्तिकहारम्	–	मोतियों के हार को	pearl neckless
अम्बुदमालाम्	–	बादलों की माला को	cloud-garland
अम्बरभूषाम्	–	आकाश की शोभा को	beauty of sky
प्रतियाम	–	(हम) लौटें	should return
जनयाम	–	(हम) उत्पन्न करें	should create
आदाय	–	लेकर	taking



अभ्यासः



1. **पाठे दत्तं गीतं सस्वरं गायत।**

2. **कोष्ठकान्तर्गतेषु शब्देषु तृतीया-विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-**

यथा- नभः <u>चन्द्रेण</u> शोभते। (चन्द्र)

(क) सा .... जलेन मुखं प्रक्षालयति। (विमल)

(ख) राघवः .... विहरति। (विमानयान)

(ग) कण्ठः .... शोभते। (मौक्तिकहार)

(घ) नभः .... प्रकाशते। (सूर्य)

(ङ) पर्वतशिखरम् .... आकर्षकं दृश्यते। (अम्बुदमाला)

3. **भिन्नवर्गस्य पदं चिनुत-**

	भिन्नवर्गः
यथा- सूर्यः, चन्द्रः, अम्बुदः, शुक्रः।	अम्बुदः
(क) पत्राणि, पुष्पाणि, फलानि, मित्राणि।	....
(ख) जलचरः, खेचरः, भूचरः, निशाचरः।	....
(ग) गावः, सिंहाः, कच्छपाः, गजाः।	....
(घ) मयूराः, चटकाः, शुकाः, मण्डूकाः।	....
(ङ) पुस्तकालयः, श्यामपट्टः, प्राचार्यः, सौचिकः।	....
(च) लेखनी, पुस्तिका, अध्यापिका, अजा।	....

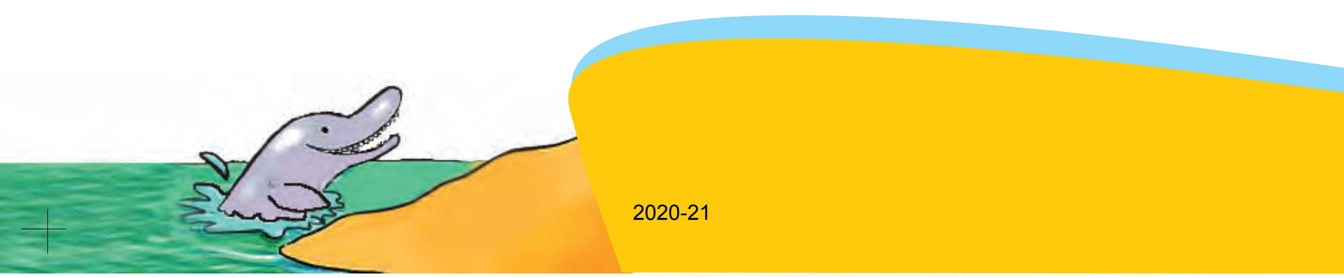
4. **प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-**

(क) के वायुयानं रचयन्ति?

(ख) वायुयानं कं-कं क्रान्त्वा उपरि गच्छति?

(ग) वयं कीदृशं सोपानं रचयाम?

(घ) वयं कस्मिन् लोके प्रविशाम?





(ङ) आकाशे का: चित्वा मौक्तिकहारं रचयाम?

(च) केषां गृहेषु हर्षं जनयाम?

5. विलोमपदानि योजयत–

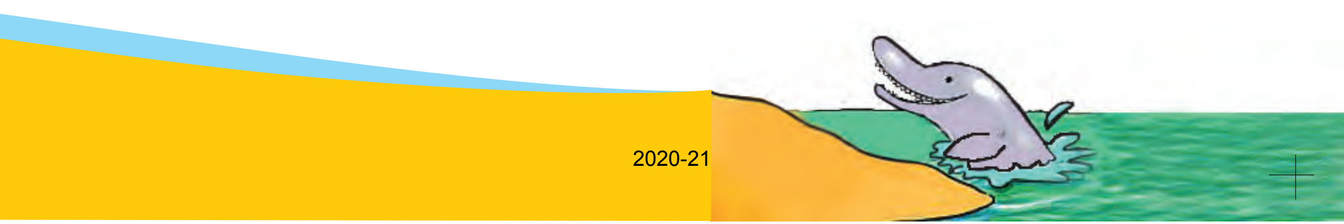
उन्नत:	पृथिव्याम्
गगने	असुन्दर:
सुन्दर:	अवनत:
चित्वा	शोक:
दु:खी	विकीर्य
हर्ष:	सुखी

6. समुचितैः पदैः रिक्तस्थनानि पूरयत–

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भानु:	भानू	....
द्वितीया	....	....	गुरून्
तृतीया	....	पशुभ्याम्	....
चतुर्थी	साधवे	....	....
पञ्चमी	वटो:	....	....
षष्ठी	गुरो:	....	....
सप्तमी	शिशौ	....	....
सम्बोधन	हे विष्णो!	....	....

7. पर्याय-पदानि योजयत–

गगने	जलद:
विमले	निशाकर:
चन्द्र:	आकाशे
सूर्य:	निर्मले
अम्बुद:	दिवाकर:



0649CH14

चतुर्दशः पाठः

अहह आः च

अजीजः सरलः परिश्रमी च आसीत्। सः स्वामिनः एव सेवायां लीनः आसीत्। एकदा सः गृहं गन्तुम् अवकाशं वाञ्छति। स्वामी चतुरः आसीत्। सः चिन्तयति–'अजीजः इव न कोऽपि अन्यः कार्यकुशलः। एष अवकाशस्य अपि वेतनं ग्रहीष्यति।' एवं चिन्तयित्वा स्वामी कथयति–'अहं तुभ्यम् अवकाशस्य वेतनस्य च सर्वं धनं दास्यामि।' परम् एतदर्थं त्वं वस्तुद्वयम् आनय–'अहह!' 'आः!' च इति।

एतत् श्रुत्वा अजीजः वस्तुद्वयम् आनेतुं निर्गच्छति। सः इतस्ततः परिभ्रमति। जनान् पृच्छति। आकाशं पश्यति। धरां प्रार्थयति। परं सफलतां नैव प्राप्नोति। चिन्तयति, परिश्रमस्य धनं सः नैव प्राप्स्यति। कुत्रचित् एका वृद्धा मिलति। सः तां सर्वां व्यथां श्रावयति। सा विचारयति–'स्वामी अजीजाय धनं दातुं न इच्छति। सा तं कथयति–'अहं तुभ्यं वस्तुद्वयं ददामि।' परं द्वयम् एव बहुमूल्यकं वर्तते। प्रसन्नः सः स्वामिनः समीपे आगच्छति।

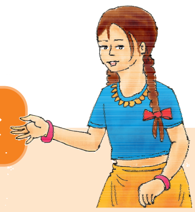


अजीजं दृष्ट्वा स्वामी चकितः भवति। स्वामी शनैः शनैः पेटिकाम् उद्घाटयति। पेटिकायां लघुपात्रद्वयम् आसीत्। प्रथमं सः एकं लघुपात्रम् उद्घाटयति। सहसा एका मधुमक्षिका निर्गच्छति। तस्य च हस्तं दशति। स्वामी उच्चैः



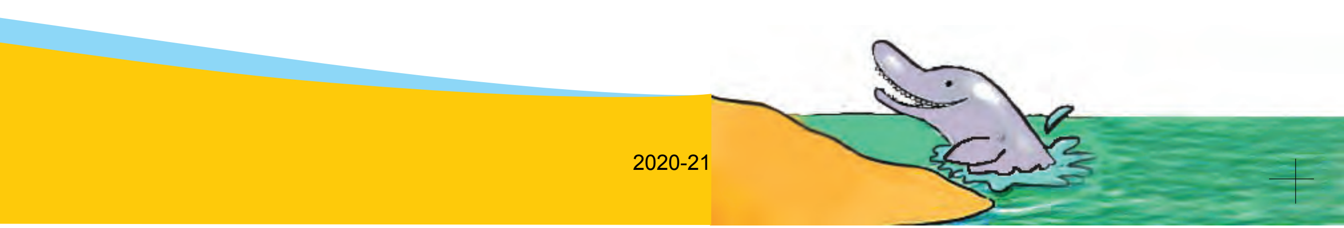
वदति–'अहह!। द्वितीयं लघुपात्रम् उद्घाटयति। एका अन्या मक्षिका निर्गच्छति। सः ललाटे दशति। पीडितः सः अत्युच्चैः चीत्करोति–'आः' इति।

अजीजः सफलः आसीत्। स्वामी तस्मै अवकाशस्य वेतनस्य च पूर्णं धनं ददाति।



शब्दार्थाः

लीनः	–	संलग्न, तल्लीन	engaged
वाञ्छति	–	चाहता/चाहती है	wishes/wants
कोऽपि(कः+अपि)	–	कोई भी	whosoever
आनय	–	लाओ	bring
अहह	–	कष्टसूचक अव्यय	oh!
आः	–	पीड़ासूचक अव्यय	ah!
आनेतुम्	–	लाने के लिए	to bring
निर्गच्छति	–	निकलता है	comes out/exits
इतस्ततः(इतः+ततः)	–	इधर-उधर	here and there
धराम्	–	पृथ्वी को	the earth
प्राप्स्यति	–	पाएगा	will receive
व्यथाम्	–	दुःख को	pain
सद्यः	–	तत्काल, तुरन्त	instantly
अर्पय	–	दे दो	give
उद्घाटयति	–	खोलता है	opens



दशति	-	डसती है, काटती है	bite
अत्युच्चैः(अति+उच्चैः)	-	बहुत जोर से	very loudly
चीत्करोति	-	चिल्लाता है	cries



अभ्यासः

1. अधोलिखितानां पदानां समुचितान् अर्थान् मेलयत-

क	ख
हस्ते	अकस्मात्
सद्यः	पृथ्वीम्
सहसा	गगनम्
धनम्	शीघ्रम्
आकाशम्	करे
धराम्	द्रविणम्

2. मञ्जूषातः उचितं विलोमपदं चित्वा लिखत-

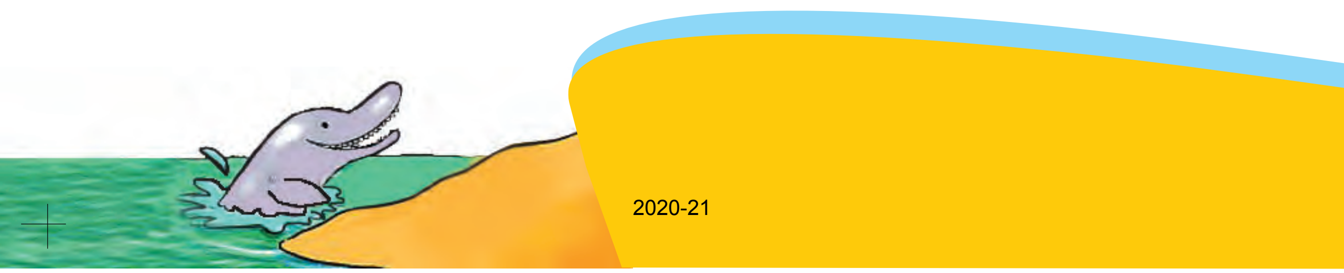
प्रविशति	सेवकः	मूर्खः	नेतुम्	नीचैः	दुःखितः

(क) चतुरः ....

(ख) आनेतुम् ....

(ग) निर्गच्छति ....

(घ) स्वामी ....





(ङ) प्रसन्नः ....

(च) उच्चैः ....

3. मञ्जूषातः उचितम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थनानि पूरयत–

इव	अपि	एव	च	उच्चैः

(क) बालकाः बालिकाः .... क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति।

(ख) मेघाः .... गर्जन्ति।

(ग) बकः हंसः .... श्वेतः भवति।

(घ) सत्यम् .... जयते।

(ङ) अहं पठामि, त्वम् .... पठ।

4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत–

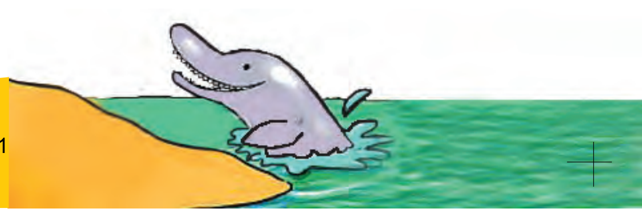
(क) अजीजः गृहं गन्तुं किं वाञ्छति?

(ख) स्वामी मूर्खः आसीत् चतुरः वा?

(ग) अजीजः कां व्यथां श्रावयति?

(घ) अन्या मक्षिका कुत्र दशति?

(ङ) स्वामी अजीजाय किं दातुं न इच्छति?





5. **निर्देशानुसारं लकारपरिवर्तनं कुरुत–**

यथा–अजीजः परिश्रमी आसीत्। (लट्लकारे) अजीजः पश्रिमी अस्ति।

(क) अहं शिक्षकाय धनं ददामि। (लृट्लकारे) ....

(ख) परिश्रमी जनः धनं प्राप्स्यति। (लट्लकारे) ....

(ग) स्वामी उच्चैः वदति। (लङ्लकारे) ....

(घ) अजीजः पेटिकां गृह्णाति। (लृट्लकारे) ....

(ङ) त्वम् उच्चैः पठसि। (लोट्लकारे) ....

6. **अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत।**

(क) स्वामी अजीजाय अवकाशस्य पूर्णं धनं ददाति।

(ख) अजीजः सरलः परिश्रमी च आसीत्।

(ग) अजीजः पेटिकाम् आनयति।

(घ) एकदा सः गृहं गन्तुम् अवकाशं वाञ्छति।

(ङ) पीडितः स्वामी अत्युच्चैः चीत्करोति।

(च) मक्षिके स्वामिनं दशतः।



0649CH15

पञ्चदशः पाठः

मातुलचन्द्र!

कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र!
कुत्र गमिष्यसि मातुलचन्द्र!

अतिशयविस्तृतनीलाकाशः
नैव दृश्यते क्वचिदवकाशः
कथं प्रयास्यसि मातुलचन्द्र!
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र!

कथमायासि न भो! मम गेहम्
मातुल! किरसि कथं न स्नेहम्
कदाऽऽगमिष्यसि मातुलचन्द्र!
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र!

धवलं तव चन्द्रिकावितानम्
तारकखचितं सितपरिधानम्
मह्यं दास्यसि मातुलचन्द्र!
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र!

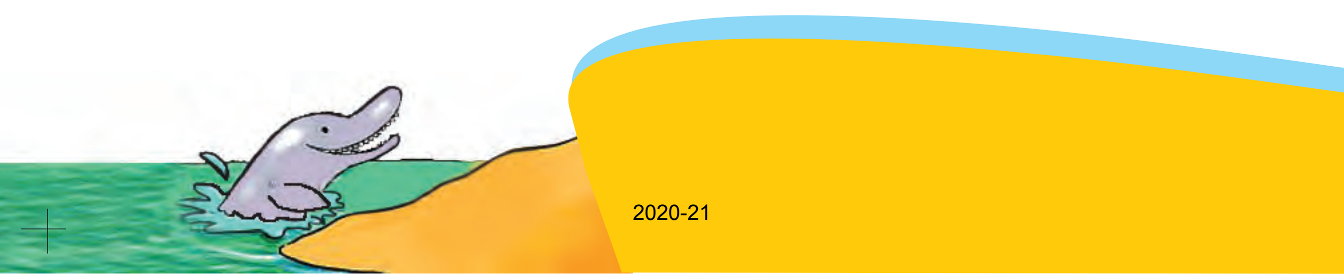
त्वरितमेहि मां श्रावय गीतिम्
प्रिय मातुल! वर्धय मे प्रीतिम्
किन्नायास्यसि मातुलचन्द्र!
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र!





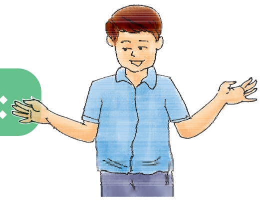
शब्दार्थाः

मातुलचन्द्र!	–	चन्दामामा!	Uncle moon
कुतः (अव्यय)	–	कहाँ से	from where
अतिशयविस्तृतः	–	अति विशाल	very stretched, extended
दृश्यते	–	दिखता है/दिखती है	it looks
क्वचित् (अव्यय)	–	कहीं भी	anywhere
प्रयास्यसि	–	जाओगे/जाओगी	will go
गेहम्	–	घर को	home
किरसि	–	विखेरते हो/विखेरती हो	scatter
धवलम्	–	सफेद	white
चन्द्रिकावितानम्	–	फैली हुई चाँदनी	extensive moonlight
तारकखचितं	–	तारों से शोभित	adorned with stars
सितपरिधानम्	–	सफेद वस्त्र	white clothes
मह्यम्	–	मुझे	to me
त्वरितम्	–	शीघ्र	fast, as soon as
एहि	–	आओ	come
श्रावय	–	सुनाओ	make me listen
वर्धय	–	बढ़ाओ	increase





अभ्यासः



1. बालगीतं साभिनयं सस्वरं गायत।

2. पद्यांशान् योजयत–

मातुल! किरसि	सितपरिधानम्.......................... ।
तारकखचितं	श्रावय गीतिम्.......................... ।
त्वरितमेहि मां	चन्द्रिकावितानम्.......................।
अतिशयविस्तृत	कथं न स्नेहम्.........................।
धवलं तव	नीलाकाशः .... ।

3. पद्यांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) प्रिय मातुल! .... प्रीतिम्।

(ख) कथं प्रयास्यसि ....।

(ग) .... क्वचिदवकाशः।

(घ) .... दास्यसि मातुलचन्द्र!।

(ङ) कथमायासि न .... गेहम्।

4. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

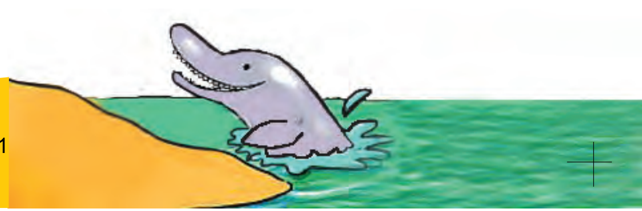
(क) अस्मिन् पाठे कः मातुलः?

(ख) नीलाकाशः कीदृशः अस्ति?

(ग) मातुलचन्द्रः किं न किरति?

(घ) किं श्रावयितुं शिशुः चन्द्रं कथयति?

(ङ) चन्द्रस्य सितपरिधानं कथम् अस्ति?



5. उदाहरणानुसारं निम्नलिखितपदानि सम्बोधने परिवर्तयत-

यथा- चन्द्रः – चन्द्र!
(क) शिष्यः – ....
(ख) गोपालः – ....

यथा- बालिका – बालिके!
(क) प्रियंवदा – ....
(ख) लता – ....

यथा- फलम् – फल!
(क) मित्रम् – ....
(ख) पुस्तकम् – ....

यथा- रविः – रवे!
(क) मुनिः – ....
(ख) कविः – ....

यथा- साधुः – साधो!
(क) भानुः – ....
(ख) पशुः – ....

यथा- नदी – नदि!
(क) देवी – ....
(ख) मानिनी – ....





6. मञ्जूषातः उपयुक्तानाम् अव्ययपदानां प्रयोगेण रिक्तस्थानानि पूरयत–

कुतः	कदा	कुत्र	कथं	किम्

(क) जगन्नाथपुरी ……………… अस्ति?

(ख) त्वं ……………… पुरीं गमिष्यसि?

(ग) गङ्गानदी ……………… प्रवहति?

(घ) तव स्वास्थ्यं ……………… अस्ति?

(ङ) वर्षाकाले मयूराः ……………… कुर्वन्ति?

7. तत्समशब्दान् लिखत–

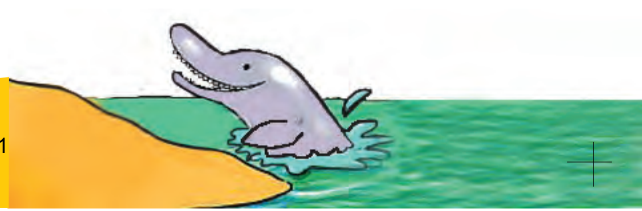
मामा ………………………

मोर ………………………

तारा ………………………

कोयल ………………………

कबूतर ………………………



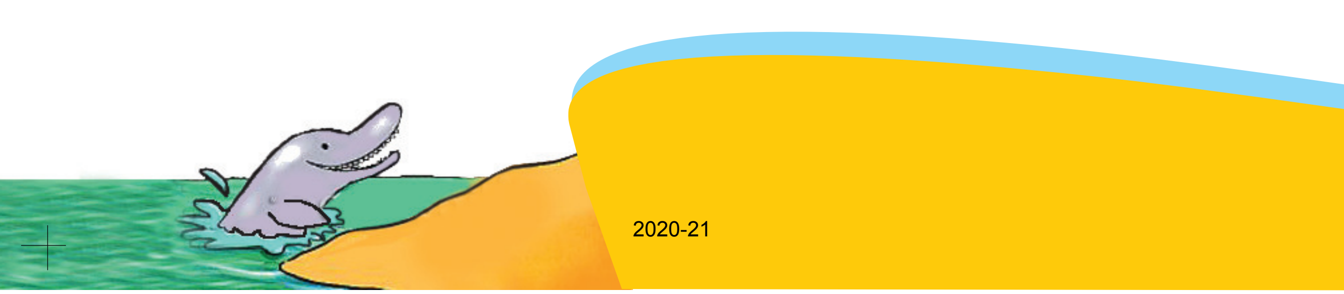
कारक-विभक्ति-परिचयः

वाक्ये क्रियायाः साक्षात् अन्वयः येन पदेन/शब्देन सह भवति तत् पदं कारकं भवति। कारकाणाम् अर्थं प्रकटयितुं येषां प्रत्ययानां संयोजनं शब्दैः सह भवति ते (प्रत्ययाः) कारक-विभक्तयः भवन्ति।

यथा- छात्राः![11] दशरथस्य[10] सुतः[1] रामः[2] दण्डकारण्यात्[8] लङ्कां[3] गत्वा युद्धे[9] रावणं[4] बाणेन[6] हत्वा विभीषणाय[7] लङ्काराज्यम्[5] अयच्छत्[12]।

क्रमसंख्या	शब्दाः/पदानि	कारकम्	विभक्तिः
1, 2	सुतः, रामः	कर्ता	प्रथमा
3, 4, 5	लङ्कां, रावणं, लङ्काराज्यम्	कर्म	द्वितीया
6	वाणेन	करणम्	तृतीया
7	विभीषणाय	सम्प्रदानम्	चतुर्थी
8	दण्डकारण्यात्	अपादानम्	पञ्चमी
9	युद्धे	अधिकरणम्	सप्तमी

विशेषः- षष्ठी-विभक्तेः अर्थ सम्बन्धः अस्ति। सम्बन्धः सम्बोधनं च कारकं न भवति। उदाहरणम्-'दशरथस्य'[10] 'हे छात्राः'[11] इति पदयोः साक्षात् अन्वयः क्रियया 'अयच्छत्'[12] इत्यनेन पदेन सह नास्ति। अतः संस्कृते एते पदे कारके न भवतः।





शब्दरूपाणि

अकारान्त-पुँल्लिङ्ग-शब्द:

बालक

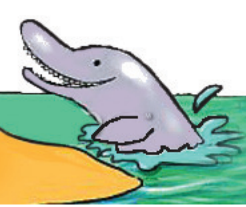
विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	बालक:	बालकौ	बालका:
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकै:
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्य:
षष्ठी	बालकस्य	बालकयो:	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयो:	बालकेषु
सम्बोधनम्	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालका:!

एवमेव नृप-देव-राम-पितामह-पण्डित-इत्यादीनाम् अकारान्त-पुँल्लिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्द:

बालिका

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिका:
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिका:
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभि:
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्य:



पञ्चमी	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधनम्	हे बालिके!	हे बालिके!	हे बालिकाः!

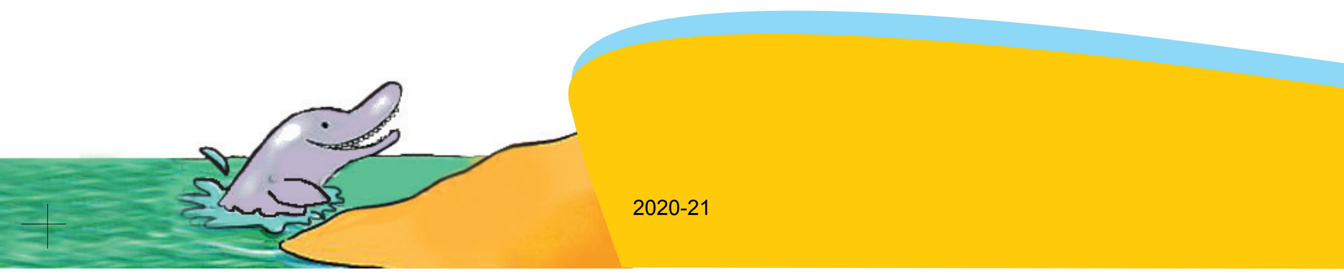
एवमेव लता-रमा-माला-कलिका-इत्यादीनाम् आकारान्त-स्त्रीलिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दः

पुष्प

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पाणि
द्वितीया	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पाणि
तृतीया	पुष्पेण	पुष्पाभ्याम्	पुष्पैः
चतुर्थी	पुष्पाय	पुष्पाभ्याम्	पुष्पेभ्यः
पञ्चमी	पुष्पात्	पुष्पाभ्याम्	पुष्पेभ्यः
षष्ठी	पुष्पस्य	पुष्पयोः	पुष्पाणाम्
सप्तमी	पुष्पे	पुष्पयोः	पुष्पेषु
सम्बोधनम्	हे पुष्प!	हे पुष्पे!	हे पुष्पाणि।

एवमेव फल-पुस्तक-नगर-मित्र-उद्यान-इत्यादीनाम् अकारान्त-नपुंसकलिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति।





इकारान्त-पुँल्लिङ्ग-शब्द:

मुनि

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मुनि:	मुनी	मुनय:
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभि:
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
पञ्चमी	मुने:	मुनिभ्याम्	मुनिभ्य:
षष्ठी	मुने:	मुन्यो:	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्यो:	मुनिषु
सम्बोधनम्	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनय:!

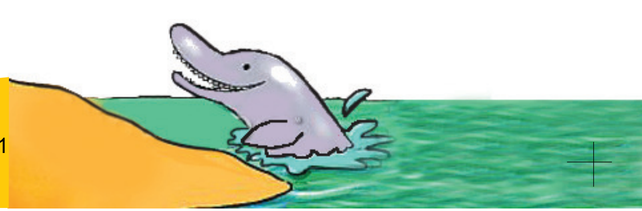
एवमेव कवि-हरि-रवि-कपि-इत्यादीनाम् इकारान्त-पुँल्लिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति।

उकारान्त-पुँल्लिङ्ग-शब्द:

भानु

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भानु:	भानू	भानव:
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभि:
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
पञ्चमी	भानो:	भानुभ्याम्	भानुभ्य:
षष्ठी	भानो:	भान्वो:	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वो:	भानुषु
सम्बोधनम्	हे भानो!	हे भानू!	हे भानव:!

एवमेव शिशु-साधु-गुरु-विष्णु-इत्यादीनाम् उकारान्त-पुँल्लिङ्ग-शब्दानां रूपाणि भवन्ति।



धातु-रूपाणि

पठ् (पढ़ना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

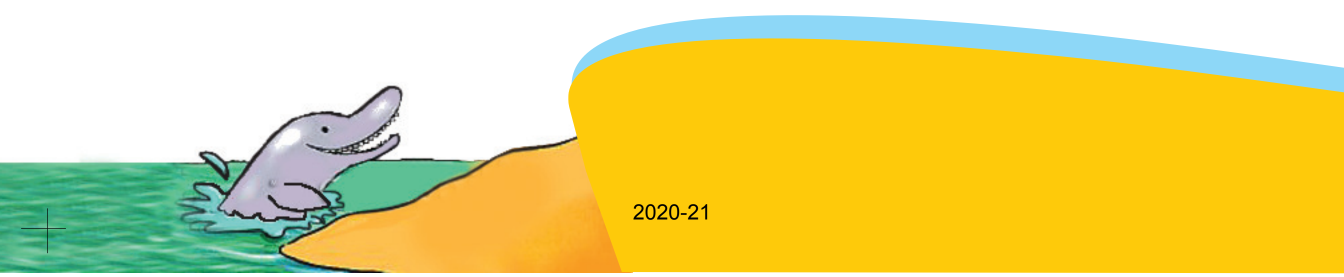
पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुषः	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तमपुरुषः	पठामि	पठावः	पठामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यमपरुषः	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तमपुरुषः	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यमपुरुषः	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तमपुरुषः	अपठम्	अपठाव	अपठाम





लोट्लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यमपुरुषः	पठ	पठतम्	पठत
उत्तमपुरुषः	पठानि	पठाव	पठाम

एवमेव हस्, चल्, खेल्, खाद्, पा (पिब), दृश् (पश्य), धाव्, पत्, भ्रम्, लिख्, इष् (इच्छा), मिल्–प्रभृतीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।

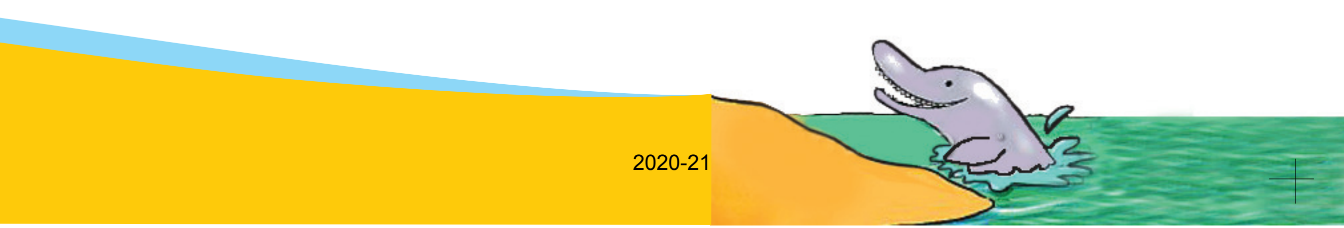
गम्–गच्छ् (जाना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यमपुरुषः	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तमपुरुषः	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यमपरुषः	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तमपुरुषः	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः





लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यमपुरुषः	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तमपुरुषः	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

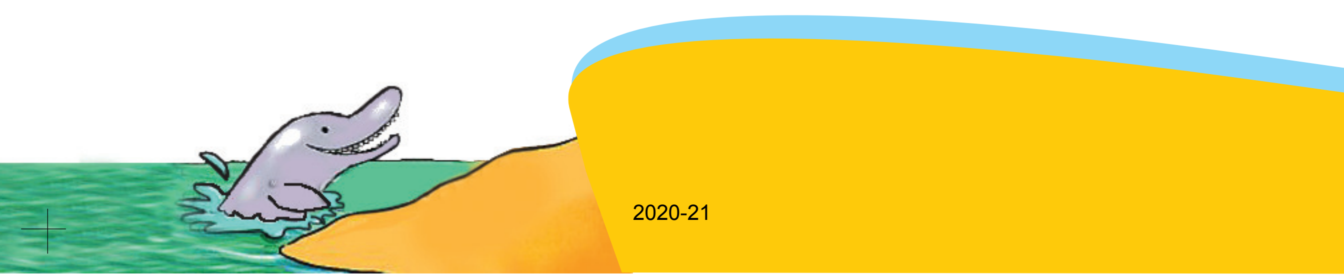
लोट्-लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यमपुरुषः	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तमपुरुषः	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

स्था-तिष्ठ (ठहरना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपरुषः	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यमपुरुषः	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तमपुरुषः	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः





लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

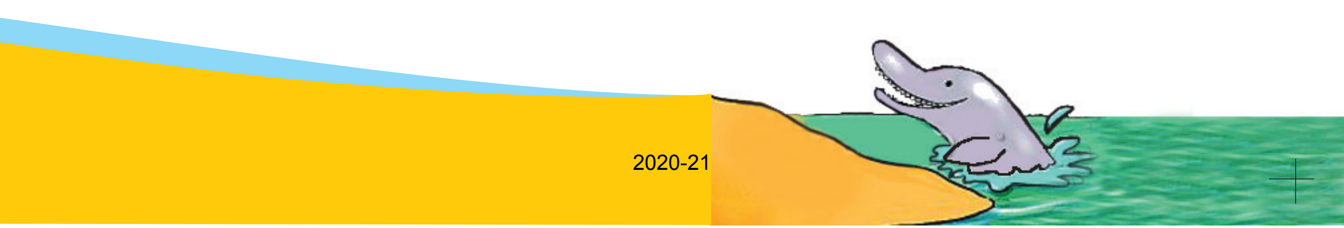
पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यमपुरुषः	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तमपुरुषः	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यमपुरुषः	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तमपुरुषः	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

लोट्-लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यमपुरुषः	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तमपुरुषः	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम



नी-नय् (लेना)

लट्लकारः (वर्तमानकालः)

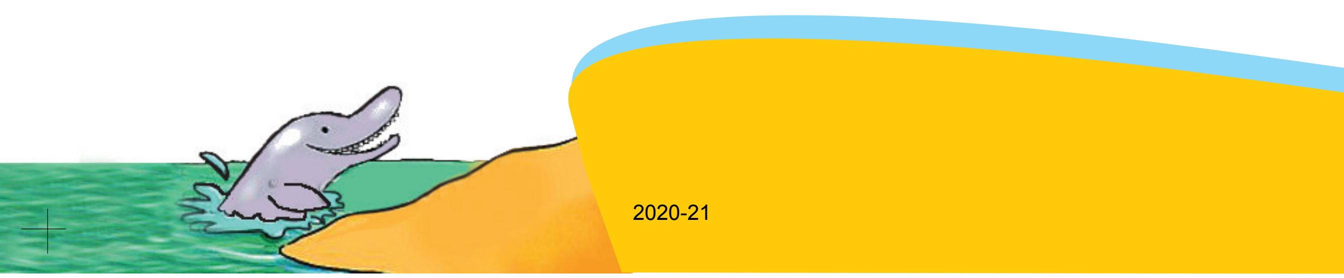
पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नयति	नयतः	नयन्ति
मध्यमपुरुषः	नयसि	नयथः	नयथ
उत्तमपुरुषः	नयामि	नयावः	नयामः

लृट्लकारः (भविष्यत्कालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ
उत्तमपुरुषः	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः

लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यमपुरुषः	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तमपुरुषः	अनयम्	अनयाव	अनयाम





लोट्-लकार: (अनुज्ञा/आदेश:)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	नयतु	नयताम्	नयन्तु
मध्यमपुरुष:	नय	नयतम्	नयत
उत्तमपुरुष:	नयानि	नयाव	नयाम

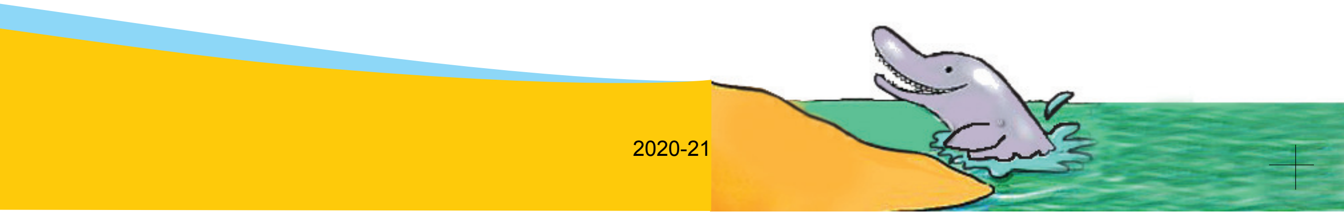
चिन्त् (सोचना)

लट्लकार: (वर्तमानकाल:)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयति	चिन्तयत:	चिन्तयन्ति
मध्यमपरुष:	चिन्तयसि	चिन्तयथ:	चिन्तयथ
उत्तमपुरुष:	चिन्तयामि	चिन्तयाव:	चिन्तयाम:

लृट्लकार: (भविष्यत्काल:)

पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुष:	चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यत:	चिन्तयिष्यन्ति
मध्यमपुरुष:	चिन्तयिष्यसि	चिन्तयिष्यथ:	चिन्तयिष्यथ
उत्तमपुरुष:	चिन्तयिष्यामि	चिन्तयिष्याव:	चिन्तयिष्याम:



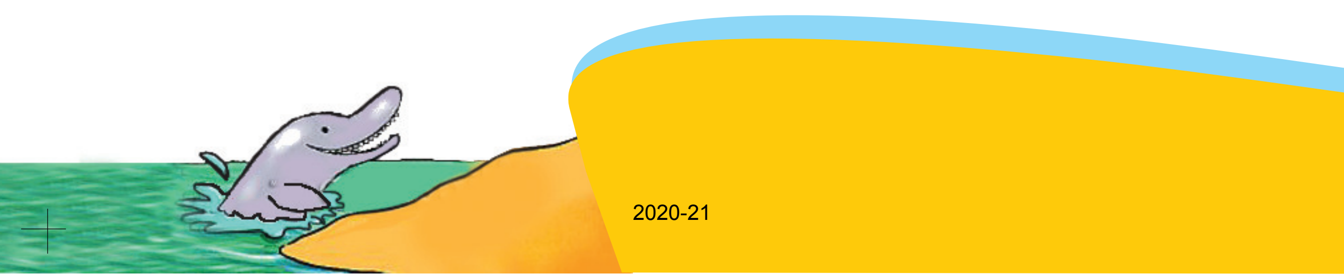
लङ्लकारः (अतीतकालः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्
मध्यमपुरुषः	अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत
उत्तमपुरुषः	अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम

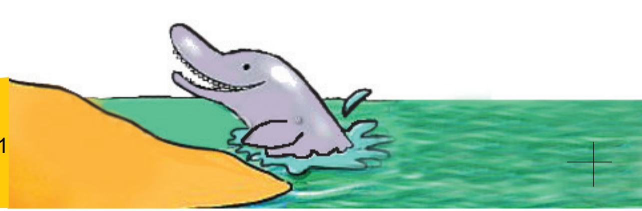
लोट्-लकारः (अनुज्ञा/आदेशः)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु
मध्यमपुरुषः	चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत
उत्तमपुरुषः	चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम

उपर्युक्तानुसारमेव हस्, चल्, खेल्, खाद्, पा, दृश्, धाव्, पत्, भ्रम्, लिख्, इष्, मिल्-प्रभृतीनां धातूनां रूपाणि भवन्ति।



टिप्पणी



टिप्पणी

